# गुरुमार्ग

# विषय-सूची


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | परिचय | : | गुरुमार्ग | ... 3 |
| 1. | पहला मार्गदर्शन | : | पश्चाताप और विश्वास करना | ... 6 |
| 2. | दूसरा मार्गदर्शन | : | गुरु दीक्षा लेना | ... 12 |
| 3. | तीसरा मार्गदर्शन | : | भगवान से प्रेम करना | ... 17 |
| 4. | चौथा मार्गदर्शन | : | अपने पड़ोसी से प्रेम करना | ... 21 |
| 5. | पांचवा मार्गदर्शन | : | महाप्रसाद लेना | ... 25 |
| 6. | छठां मार्गदर्शन | : | साधना | ... 30 |
| 7. | सातवाँ मार्गदर्शन | : | विनती प्रार्थना | ... 35 |
| 8. | आठवाँ मार्गदर्शन | : | उदारता से देना | ... 39 |
| 9. | नौवां मार्गदर्शन | : | शिष्य बनाना | ... 43 |
| 10. | दसवां मार्गदर्शन | : | सत्संग | ... 49 |


## समर्पित

ये पुस्तिका उन लोगों को समर्पित है जो 'गुरु' के 'मार्ग' पर चलने के खोज में है, चाहे जहाँ कहीं भी वे रहे।

## सम्पर्क माध्यम

यदि आपके पास कोई सवाल या सुझाव हों तो कृपया हमें सम्पर्क करें–

**www.ashramoflight.com**

# परिचय : गुरुमार्ग

प्रेम अपनी दुकान की साफ सफाई कर रहा है। सुरेश, प्रेम का दोस्त है और उससे मिलने दुकान में आता है।

**सुरेश** : "और भाई, क्या तुम सत्संग जाओगे आज शाम?"

**प्रेम** : "नहीं, आज तो कोई सत्संग नहीं है। सत्संग होने में कुछ दिन है। क्यों?"

**सुरेश** : "अच्छा, मैं नई दुकान खोलना चाहता हूँ और वहाँ प्रभु यीशु की पूजा करना चाहता हूँ।"

**प्रेम** : "आज शाम मैं राकेश जी के घर जा रहा हूँ। वह सत्संग के मुखिया हैं। शायद वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं।"

**सुरेश** : "हाँ, ठीक है।"

प्रेम और सुरेश राकेश जी से मिलते हैं। राकेश जी अपने घर में चटाई पर बैठे हैं। प्रेम सुरेश का परिचय राकेश जी से कराता है। कुछ समय तक वे बातें करते हैं और कुछ ही देर बाद सुरेश पूछ ही लेता है।

**सुरेश** : "राकेश जी, मैं प्रभु यीशु की पूजा कैसे कर सकता हूँ?"

**राकेश जी** : "सनातन गुरु यीशु की पूजा करने के लिए, हमें उसे अपने सारे हृदय से प्रेम करना होगा और उसके दिये हुए मार्ग पर चलना होगा।"

**सुरेश** : "राकेश जी, हम कैसे गुरु यीशु के मार्ग पर चल सकते हैं?"

**राकेश जी** : "गुरु यीशु का मार्ग सरल मार्ग नहीं है। सद्गुरु यीशु ने कहा कि दो मार्ग हैं- एक मार्ग जो संकरा है। इस संकरे मार्ग का द्वार छोटा है और बहुत कम लोग ही प्रवेश कर पाते हैं लेकिन यही मार्ग सच्चा मार्ग है जो हमें अमृत जीवन देता है। दूसरा मार्ग चौड़ा मार्ग है और उसका द्वार भी चौड़ा है। बहुत से लोग उस मार्ग पर ही चलते हैं क्योंकि उस मार्ग से यात्रा करना सरल है किन्तु ये मार्ग हमें मृत्यु और अंधकार की ओर ले जाता है।"

**सुरेश** : "लेकिन राकेश जी, हम कैसे इस मार्ग पे चलना शुरू कर सकते हैं?"

**प्रेम** : "मैं सोचता हूँ कि, हमें मार्ग पर चलने के लिए सबसे पहले उस द्वार में प्रवेश पाना होगा।"

**राकेश जी** : "हाँ आप सही कह रहे हैं। सबसे पहले हमें उस द्वार से ही प्रवेश करना होगा।"

**प्रेम** : "ये द्वार कैसा है और हम इसमें कैसे प्रवेश पा सकते हैं?"

राकेश जी : "इस मार्ग का द्वार छोटा है तो उस में प्रवेश करने के लिए हमें झुककर नम्र बनना होगा।"

**सुरेश** : "अगर हम नियमित रूप से पूजा पाठ, तपस्या और व्रत करते हैं तो क्या हम उस द्वार में प्रवेश करेंगे कि नहीं?"

**राकेश जी** : "सुनो सुरेश मैं तुम्हें ये कहानी सुनाता हूँ, ये कहानी यीशु ग्रन्थ की एक कहानी से मिलती जुलती है।

"सद्गुरु ने एक कहानी बताई जिस में दो पुरुष मन्दिर जाते हैं प्रार्थना करने के लिए। एक व्यापारी था जो बड़े अच्छे कपड़े पहने था। उसके हाथों पर रक्षा सूत्र बंधा हुआ था और उनके माथे पर एक बड़ा तिलक था। दूसरा व्यक्ति एक बहुत बड़ा गुंडा था। वह सोने का चैन पहने था और उसकी उँगलियों पर बहुत सी अंगूठियाँ थी। व्यापारी ने यह प्रार्थना किया कि "हे भगवान, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि मैं इस दुष्ट गुंडा की तरह नहीं हूँ। मैं मन्दिर में अक्सर दान देता हूँ और मैं हफ्ते में दो बार व्रत रखता हूँ। मैं अधिक पूजा करता हूँ। और फिर गुंडा ने अपने सर को झुकाते हुए और सीने को पीटते हुए प्रार्थना किया कि "हे भगवान, मुझ पर दया करो। मैं एक पापी मनुष्य हूँ!"

**राकेश जी** : "भगवान ने किसकी प्रार्थना को स्वीकार किया, व्यापारी का या गुंडे का?"

**सुरेश** : "भगवान ने व्यापारी के प्रार्थना को स्वीकार किया क्योंकि वह दान देता था और व्रत रखता था और सारी पूजा करता था।"

**प्रेम** : ''नहीं, भगवान ने गुंडा की प्रार्थनाओं को स्वीकार किया क्योंकि वह नम्र था और उसने स्वीकार किया कि वह पापी मनुष्य था। व्यापारी में घमंड था और उसने यह गलती से सोचा कि वह पापी नहीं था।

**राकेश जी** : ''हाँ, हमें नम्र होना चाहिए। तब हम सद्गुरु यीशु के मार्ग पर चल सकते हैं।

**सुरेश** : ''लेकिन राकेश जी उनका मार्ग क्या है?''

**राकेश जी** : ''आपको उनके शिक्षाओं पर चलना होगा, उनके शिक्षाओं पर चलने से आप उनका मार्ग पा लेंगे और अमृत जीवन पाएँगे।

**प्रेम** : ''राकेश जी, कृपया मुझे इस गुरुमार्ग के बारे में और बताइए।''

# 1. पहला मार्गदर्शन : पश्चाताप और विश्वास करना

**प्रेम** : "राकेश जी मैं सुरेश को बता रहा था कि कैसे पश्चाताप करना और सनातन सद्गुरु यीशु के मार्ग पर चलना है। लेकिन उसके लिए यह समझना कठिन है। भगवान हमारे गंदे जीवन और गलत कामों को कैसे स्वीकार कर सकते हैं?"

**सुरेश** : "इससे पहले कि हमें स्वीकार किया जाये, क्या हमें तपस्या करना और अपने आप को शुद्ध बनाना नहीं है?"

**राकेश जी** : "लेकिन अगर हम तपस्या के द्वारा अपने आप को शुद्ध बना सकते हैं तो हमें भगवान की क्या जरूरत है? हम अपने प्रयासों के द्वारा अपने आप को कैसे शुद्ध बना सकते हैं?" सुरेश घबरा के प्रेम को देखता है।

**राकेश जी** : "मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

एक बार की बात है, एक धनी व्यक्ति था जिस के दो बेटे थे। बड़ा बेटा खूब मेहनत करता था। वह अपने पिता के प्रति बहुत आज्ञाकारी था। वह खेतों को संभालने में अपने पिताजी की मदद करता था। लेकिन जो छोटा बेटा था वह बहुत लापरवाह था। वह अपना सारा समय दोस्तों के साथ घूमने में गंवा देता था।

एक दिन छोटा बेटा अपने पिता के पास आकर अपने धन का हिस्सा माँगता है। पिताजी को यह सुनकर झटका लगता है और उसको यह बात बहुत चोट पहुँचाती है। लेकिन आखिर में वह बहक जाता है और अपने बेटे को उसका हिस्सा दे देता है। पूरे समाज में ये बात फैल गयी और लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। वह बेटा गाँव छोड़ कर दूर के शहर में जाता है।

जल्दी ही वह अपनी सारे सम्पत्ति को महंगी चीजों को खरीदने में, बहुत ज्यादा शराब पीने में, जुआ खेलने में और चरित्रहीन स्त्रियों के साथ रिश्ते रखने में उड़ा देता है। जल्दी ही उसके सारे पैसे खत्म हो गये और उसके सारे दोस्तों ने उसे छोड़ दिया। अब वह अकेला हो गया था। तभी उस शहर में अकाल पड़ा और उसको सड़क पर रहना पड़ा था और एक मजदूर बनकर काम लेना पड़ा।

एक दिन वह कुछ जानवरों को देखता है जो जमीन पर से कुछ खाना खा रहे हैं और वह इतना भूखा था कि वह उस खाने को भी खाना चाहता था। फिर वह सोचने लगता है कि उसके पिता के घर के नौकर भी उससे अच्छा खाना खाते थे। फिर उसको अपनी गलती का एहसास होने लगा और वह सोचने लगा कि "मेरे पिताजी के बहुत से नौकर हैं जिनके पास उतना खाना है कि वे खा नहीं सकते हैं और यहाँ मैं भूखे मर रहा हूँ। मैं वापस अपने पिताजी के पास जाऊँगा और मैं उनसे कहूँगा कि पिताजी मैंने भगवान और आपके नजर में गलती की। मैं आपका बेटा कहलाने के लायक नहीं हूँ। कृपया आप मुझे अपने नौकर के रूप में रख लीजिए।" और वह वहाँ से उठकर अपने पिता के पास गया।

सुरेश प्रेम से कहता है : "वह बहुत बड़ा मूर्ख है! उसके पिता उसे कभी नहीं स्वीकार करेंगे क्योंकि उसने यह सब किया!"

जब वह दूर पे ही था, उसके पिता ने उसे पहचान लिया और उसे उस पर बड़ी तरस आयी। और पिता दौड़कर उसे अपने गले लगा लेता है और उसे चूमता है। लेकिन उसके बेटे ने कहा कि "पिताजी मैंने भगवान और आपके नजर में गलती की। मैं आपका बेटा कहलाने के लायक भी नहीं हूँ..." लेकिन उसके पिता ने अपने नौकरों को बुलाकर कहा कि "जल्दी से उत्तम कपड़े लाकर इसको पहनाओ! इसके सर पर पगड़ी बांध दो और इसके पैर धो लो। बढ़िया से बढ़िया खाना बनाओ! हम भोज करेंगे और खुशियाँ मनाएँगे। मैं इसके सर पर तिलक लगाऊंगा क्योंकि यह मेरा बेटा मुझे वापस मिल गया है। मैंने सोचा कि यह मर गया था, और वह फिर से जिंदा हो गया है। मैंने सोचा कि यह मुझसे खो गया है, लेकिन यह मुझे वापस मिल गया है।"

उस समय बड़ा बेटा खेत में था। जैसे वह घर के पास आने लगा, उसने लोगों को गाते और नाचते हुए सुना। उसने एक नौकर को बुलाया और पूछा कि यह सब क्या हो रहा है। नौकर ने कहा कि "आपका भाई आ गया, और आपके पिताजी खुशियाँ मना रहे हैं क्योंकि वह घर वापस आ गया।" बड़ा बेटा बहुत गुस्सा हो गया। अब वह घर के अंदर जाने से भी इन्कार करने लगा।

तब उसका पिता बाहर गया और उसे अंदर बुलाया। तब बड़ा बेटा अपने पिता के ऊपर चिल्लाया कि "देखिए, मैंने इतने सालों से आपके लिए एक दास की तरह काम किया। मैंने आपकी किसी भी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया। लेकिन आप ने मेरे लिए कोई भोज तो कभी नहीं दी कि मैं अपने दोस्तों को खाने पर बुलाऊँ? लेकिन जब आपका वह बेटा आ गया, जो अपने सारे पैसे को वेश्याओं पर खर्च किया, उसके लिए आपने सारे संसार को बुला दिया।" फिर पिता ने कहा कि "मेरे बेटे तुम हरदम मेरे साथ रहे, और जो भी मेरे पास है वह सब कुछ तुम्हारा है। लेकिन खुशियाँ मनाना और आनन्द दिखाना जरूरी है। क्योंकि यह तुम्हारा जो भाई है जिसको मैंने मरा हुआ समझा, वह जिंदा है. मैंने सोचा कि वह खो गया था, लेकिन अब वह मिल गया है।"

**प्रेम** : "कोई दूसरा पिता होता तो वह उस बेटे को डाँट कर भगा देता है।

**सुरेश** : "अगर मैं उस का पिता होता तो मैं उस को मार कर उसको वापस वहाँ भेजता जहाँ से वह आया था।

**राकेश जी** : "सद्गुरु यीशु हमें बताते हैं कि पिता इस कहानी में भगवान के जैसे हैं। भगवान किसी सांसारिक पिता के जैसे नहीं है। वह खुशी से किसी को भी स्वीकार करता है जो सत्य मार्ग पे चलना चाहता है। उनकी करुणा से वह उन्हें शुद्ध बनाता है। अगर कोई सत्य मार्ग को छोड़ देता है पर बाद में अपने आप को नम्र बनाकर सत्य मार्ग पर दुबारा आ जाता है तो भगवान उनके कारण आनंद मानते हैं।

**सुरेश** : "तो हम सत्य मार्ग पर कैसे वापस जा सकते हैं?"

**राकेश जी** : "हमें भगवान के पास जाकर पश्चाताप करना होगा।"

**सुरेश** : "पश्चाताप? पश्चाताप करने का मतलब क्या है?"

**प्रेम** : "इसका मतलब यह है कि हम अपने पुराने जीवन को छोड़ देते हैं। उसी तरह जब छोटा बेटा निर्णय लेता है कि वह अपने पिता के पास जाएगा। वह अपने पापी जीवन को छोड़ दिया और अपने पिताजी से क्षमा माँग लिया।"

**राकेश जी** : ''हाँ। पश्चाताप करने का मतलब यह है कि आप अपने पुराने पापी जीवन से मुँह फेरते हैं। तब भगवान आप के अधर्म को हटा देंगे और आप को एक शुद्ध हृदय देंगे। तब आप एक नया जीवन जीने की शुरुआत कर सकते हैं। यह नया जन्म है - एक आध्यात्मिक जन्म। सद्गुरु यीशु ने कहा कि आप को एक नये जन्म की जरूरत है, भगवान की आत्मा के द्वारा, तब आप भगवान के राज्य का अनुभव कर सकते हैं।''

**सुरेश** : ''मैं भी यह नया जीवन चाहता हूँ।''

**राकेश जी** : ''हाँ, आप इस नये जीवन को पा सकते हैं। पहले आप को पछताना होगा और विश्वास करना होगा। यीशु ग्रन्थ में लिखा है कि सद्गुरु यीशु में विश्वास करें और आप मोक्ष पाएँगे।

बाद में सुरेश और प्रेम राकेश को छोड़ कर घर जाते हैं। रात को सुरेश को नींद नहीं लगती है। वह प्रेम के घर जाता है और उसे उठा देता है।

**सुरेश** : ''भाई, मैं डरता हूँ कि मैं अपने जीवन में गलत मार्ग पर हूँ। मैं सत्य मार्ग पर चलना चाहता हूँ। लेकिन ये सत्य मार्ग कहाँ मिलेगा? इस जीवन में बहुत भ्रम है।

**प्रेम** : ''इसीलिए सद्गुरु यीशु संसार में आया। उन्होंने कहा कि 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।' वह हमें सही मार्ग दिखाता है, जो हमारे परम पिता की ओर जाता है।

**सुरेश** : ''तो मुझे क्या करना चाहिए भाई?''

**प्रेम** : ''जैसे राकेश जी ने कहा, आप को पछताना होगा और प्रभु यीशु में विश्वास करना होगा। आओ हम सद्गुरु यीशु के चरणों में जाते हैं। क्यों नहीं आप प्रार्थना करते हैं? उस कहानी के छोटे बेटे की तरह स्वीकार करना कि आप अधर्म से भरे हुए हैं और आप एक पापी मनुष्य हैं। अपने सारे गलत कर्म और सोच-विचार उनको कह दें और पछतायें।'' सुरेश अपने हाथों को जोड़कर झुक जाता है।

**सुरेश** : "हे भगवान, मैं एक पापी मनुष्य हूँ। मैं गलत मार्ग पे हूँ और मुझे नहीं मालूम कि जीने का सही तरीका क्या है। मैं लोगों को धोखा देता हूँ और झूठ बोलता हूँ। मैंने बहुत लोगों से कर्ज लिया। मैं और ऐसे नहीं जी सकता हूँ। मुझे उस चक्कर से मुक्त होना है। हे भगवान यीशु, क्या आप सही में मेरी मदद कर सकते हैं?"

सुरेश अपना आशाहीन दशा के विषय में सोचता है और रोने लगता है। कुछ समय बाद प्रेम सुरेश के कंधे पर अपना हाथ रखता है।

**प्रेम** : "हे भाई! सद्गुरु यीशु आप को बचाएगा और आप को सत्य मार्ग पर डाल देगा। उनके मृत्यु के कारण आप का सारा पाप और अधर्म को दूर किया गया है और अब आप सही मार्ग पर चल सकते हैं। चिंता मत करो भाई! सद्गुरु यीशु को अपना जीवन अर्पित कर दीजिये और उन पर विश्वास रखें।"

**सुरेश** : "प्रभु मुक्तिदाता, मैं नहीं जानता हूँ कैसे, लेकिन मैं आप के मार्ग पे चलना चाहता हूँ। विश्वास के द्वारा मैं आप को अपना जीवन देता हूँ। आप ही मेरी आशा हैं। जय हो, जय हो, जय हो।"

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

"समय पूरा हुआ है, और भगवान का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और शुभ सन्देश पर विश्वास करो।" *(मारकुस 1:15)*

## इन सवालों का जवाब दें–

1. जो आप ने पढ़ा उस पर ध्यान करें। इसमें भगवान आपको क्या कह रहे हैं?
2. पिता की कहानी में पिता किस का प्रतीक है? छोटा बेटा किसका प्रतीक है?
3. पश्चाताप करने का मतलब क्या है? इस कहानी में सुरेश कैसे पश्चाताप करता है? आप को क्या लगता है कि वह क्यों रो रहा था?

4. किन चीजों में आप इस कहानी के छोटे बेटे की तरह है (आपके व्यवहार या सोच में)? क्या आप को लगता है कि आप पिता परमात्मा से दूर हैं या पास हैं? आप कैसे उस के और करीब हो सकते हैं?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- अगर आप अभी गुरुमार्ग पर कदम रखने के लिए तैयार है और अगर आप पछताते हैं और सद्‌गुरु यीशु में विश्वास करते हैं तो सुरेश की प्रार्थना की तरह एक सरल प्रार्थना करें। अगर आप इस कदम को लेने के लिए तैयार नहीं हैं तो चिंता मत कीजिये। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है और आपको अपने आप से ईमानदार होना चाहिए। प्रार्थना करते रहिये कि भगवान आपका मार्गदर्शन करें और अपने प्यार को आप को प्रगट करें।
- जब आप यह जीवन बदलने वाला निर्णय लेते हैं भगवान से पूछें कि वह आप को दिखाएँ जिस को आप यह बात बता सकते हैं। शायद वह आप के परिवार का व्यक्ति हो या कोई और दोस्त हो जो आध्यात्मिक बातों में रुचि रखता हो। प्रार्थना करें कि वे भी गुरुमार्ग को पा सकें।

## 2. दूसरा मार्गदर्शन : गुरु दीक्षा लेना

प्रेम और सुरेश राकेश जी से मिलते हैं। राकेश जी बहुत खुश हैं कि सुरेश ने सद्‌गुरु यीशु के पीछे चलने और उनके भक्त बनाने का निर्णय लिया।

**सुरेश** : "राकेश जी, मैं सद्‌गुरु यीशु का भक्त बनना चाहता हूँ। मैंने पश्चाताप किया। क्या मुझे बस उतना ही करना है?"

**राकेश जी** : "सुरेश, क्योंकि आप ने पश्चाताप किया और सद्‌गुरु यीशु में विश्वास करते हैं आपने नये जन्म को पाया। लेकिन एक सच्चा भक्त होने के लिए आपको उनकी शिक्षाओं पर चलना होगा। पश्चाताप और विश्वास के द्वारा ही हम संकरे द्वार में प्रवेश करते हैं, लेकिन सत्य मार्ग पर चलने के लिए हमें उनकी आज्ञाओं का पालन करना होगा।

**प्रेम** : "गुरु यीशु की शिक्षाएँ क्या हैं?

**राकेश जी** : "यीशु ग्रंथ उनके शिक्षाओं से भरा है, लेकिन किसी भक्त के लिए जो पश्चाताप और विश्वास करता है प्रथम कदम गुरु दीक्षा लेना होता है।"

**सुरेश** : "गुरु दीक्षा क्या है? क्या इस का मतलब यह है कि हम उनके तस्वीर को पूजा कमरे में लगा देते हैं या माला पहनते हैं?

**राकेश जी** : ना तो पूजा के कमरे से और ना ही माला से, लेकिन असली गुरु दीक्षा तो अपने गुरु को अपने दिल में जगह देने से है। गुरु दीक्षा मतलब ये है कि हम निश्चय कर लें कि हम गुरु यीशु को ही अपना एक मात्र गुरु मान कर उन्हीं के पीछे चलेंगे और उनके दिए हुए आज्ञाओं को मानेंगे।

**सुरेश** : "लेकिन गुरु दीक्षा है क्या?

**राकेश जी** : "दीक्षा एक रिवाज है जिसे एक भक्त यह दिखाने के लिए करता है कि वह किसी एक गुरु के पीछे चलने का निर्णय लेता है। हर गुरु का अपना दीक्षा होता है। सनातन सद्‌गुरु यीशु का दीक्षा जल संस्कार है।

**प्रेम** : ''क्या सद्गुरु यीशु के हर भक्तों को गुरु दीक्षा लेना पड़ता है?

**राकेश जी** : ''सद्गुरु यीशु के स्वर्ग, जहाँ से वह आये, वापस जाने से पहले उन्होंने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे पूरे संसार के लोगों को उनकी शिक्षाएँ दें और हर यीशु भक्त को जल संस्कार दें।

**सुरेश** : ''गुरु दीक्षा लेने के लिए मुझे बहुत सी तैयारियाँ करनी होगी न? कितना समय लगेगा?

**राकेश जी** : ''नहीं, जैसे ही आप ने पश्चाताप किया और निर्णय लिया कि आप अपने हृदय में सद्गुरु यीशु में विश्वास करेंगे आप जल संस्कार ले सकते हैं। आप को प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। मैं आपको यीशु के एक भक्त की कहानी बताता हूँ जिन्होंने वही किया।

एक दिन सुबह में फिलिप को, जो यीशु जी का एक शिष्य था, एक ईश दूत अचानक से प्रगट हो गया और कहा कि ''उठो और उस रास्ते पे चले जाओ जो शहर से नीचे की ओर जाता है।'' तो वह उठकर उस रास्ते की ओर गया। वह एक ऐसा रास्ता था जो गर्म और सूखा रेगिस्तान के बीच से होकर गया। जब वह इस रास्ते पे जा ही रहा था उसने एक आदमी को रथ पर सवार उसकी तरफ आते हुए देखा। वह व्यक्ति एक दूर देश से आया हुआ था। वहाँ की रानी के महल में वह एक मंत्री था। वह उसके सारे खजाने का हिसाब किताब करता था। वह इस शहर में भगवान की पूजा करने के लिए आया था और अब वह वापस अपने देश को जा रहा था। वह रथ में बैठकर यीशु ग्रन्थ में से ईश प्रवक्ता यशाया के भविष्यवाणियों को पढ़ रहा था।

तब पावन आत्मा ने फिलिप से कहा कि ''जाओ और इस व्यक्ति से बात करो।'' तो वह रथ के पास जाकर सुना कि वह ईश प्रवक्ता यशाया के लेख से पढ़ रहा था। फिलिप ने उस से पूछा ''जो आप पढ़ रहे हैं क्या आप उसे समझते हैं?'' उस व्यक्ति ने कहा ''अगर कोई मुझे ना समझाएँ तो मैं कैसे समझूँ? आप मेरे

साथ रथ में बैठकर इस का मतलब मुझे सिखाइये। तो फिलिप रथ में चढ़ कर मंत्री के साथ सवार हो गया। मंत्री ने उस लेख को आगे पढ़ना जारी किया और फिलिप ने सुना ''वह भेड़ की नाईं वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मेमना अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उस ने भी अपना मुँह नहीं खोला।''

तब मंत्री ने फिलिप से पूछा ''कृपया मुझे बताइये, क्या यह ईश प्रवक्ता अपने विषय में बात कर रहा है या किसी और के विषय में?'' तो फिलिप उस वचन से शुरू करके उस को सद्गुरु यीशु के बारे में बताने लगा। यीशु जी संसार में आये भगवान के मेमना के रूप में। उस को क्रूस पर मारा गया और संसार के पापों को ले जाने के लिए मर गया। हमें पश्चाताप करना है और यीशु जी में विश्वास करना है। हमें पूरी तरह से उनको अपना जीवन समर्पित करना है और उनका दीक्षा लेना है जिस को हम जल संस्कार कहते हैं।

वे एक-दूसरे से बातचीत करते रास्ते पर यात्रा करते हुए आगे जा रहे थे। तब वे पानी के एक गहरे धारा के पास आये जो रेगिस्तान के बीच में से बह रही थी। उस गर्म और सूखी भूमि में ये एक बहुत ही सुन्दर जगह थी। तब मंत्री ने कहा ''देखो, यहाँ पर बहुत पानी है। मैं इसी वक्त सद्गुरु यीशु की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करूँ और जल संस्कार लूँ? और उसने रथ को रोकने की आज्ञा दी। तब फिलिप और मंत्री एक साथ जल की ठंडी धारा में चले गये और फिलिप ने उसे जल संस्कार दिया। जैसे वे पानी में से उतरने लगे अचानक से पवित्र आत्मा ने फिलिप को वहाँ से ले लिया – एक पल में वह पूरी तरह से गायब हो गया। मंत्री अकेला रह गया, धारा में खड़ा था। उस के बाद मंत्री ने उसे दुबारा कभी नहीं देखा। वह आनन्द मानते हुए अपने देश को वापस लौट गया। वह सद्गुरु यीशु में सच्चा जीवन को पाया और उसने उनके मार्ग पर चलने का निर्णय लिया। फिलिप एक दूसरे इलाके में प्रगट हुआ और वहाँ यात्रा किया सद्गुरु यीशु का शुभ सन्देश उन गाँवों में बताते हुए।

**प्रेम** : "राकेश जी, हमें जल-संस्कार के बारे में और बताइये। इसे कैसे किया जाता है?"

**राकेश जी** : "हमारा गुरु-दीक्षा एक संस्कार है और उसे पानी से किया जाता है इसलिए हम उस को जल संस्कार कहते हैं। मुखिया या दूसरे भक्त के द्वारा नया भक्त पानी में ले जाया जाता है। नया भक्त सद्गुरु यीशु में अपने विश्वास को घोषित करता है और उनके पीछे चलने का संकल्प लेता है। पिता, पुत्र और पावन आत्मा के नाम उनके ऊपर बोले जाते हैं और वह पूरी तरह से पानी में डुबकी लेता है। वह पानी से बाहर आता है और उसके लिए प्रार्थना किया जाता है कि वह भगवान की आत्मा से भर जाए।"

**प्रेम** : "जल दीक्षा का अर्थ क्या है?"

**राकेश जी** : "जल संस्कार हमारी मृत्यु का प्रतीक है। हम अपने आप को, हमारे पापों को, हमारे पुराने जीवनों को मृत करते हैं। जैसे यीशु जी मृत्यु से जीवित हो गये, ठीक वैसे ही हमें भी नये जीवन में लाया जाता है। अब हम सद्गुरु यीशु में एक नया जीवन जीते हैं।"

**सुरेश** : "तो मैं भी उस मंत्री की तरह बनना चाहता हूँ जिसने कहा 'क्यों नहीं मैं इसी वक्त जल संस्कार लेता हूँ?" मैं यीशु जी के आज्ञाओं को पालन करने के लिए समर्पित होना चाहता हूँ।"

**राकेश जी** : "अगर आप उस समर्पण के लिए गंभीर हैं तो आप सद्गुरु यीशु का दीक्षा लेने के लिए तैयार हैं। लेकिन यह जान लीजिए कि आप के पास सिर्फ एक गुरु हो सकता है और आप को उन के पीछे ही चलना पड़ेगा।"

**सुरेश** : "मैं सद्गुरु यीशु की ही भक्ति करूँगा और किसी दूसरे की नहीं। मैं उनके मार्ग पे चलूँगा। मैं तैयार हूँ।"

**राकेश जी** : "हाँ, मुझे विश्वास है कि आप तैयार हैं।"

**प्रेम** : "मैं बहुत खुश हूँ कि आप मेरे गुरु भाई बनने वाले हैं!"

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें -

***मन परिवर्तन करो और तुममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने पापों की क्षमा के लिए सद्गुरु यीशु के नाम से जल-संस्कार ले; तो भगवान तुम्हें ईश-आत्मा देंगे।*** *(ईश-आत्मा के कार्य 2:38)*

## इन सवालों का जवाब दें–

1. यीशु जी का सच्चा भक्त होने का क्या मतलब है?
2. गुरु दीक्षा इतना महत्वपूर्ण क्यों है? क्या हर एक भक्त को जल दीक्षा लेना पड़ता है?
3. एक भक्त जल संस्कार लेने के लिए कब तैयार होता है?
4. क्या आप को लगता है कि आप जल संस्कार लेने के लिए तैयार हैं? क्यों या क्यों नहीं?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- आप आज की शिक्षा पर कैसे प्रतिक्रिया दिखाना चाहते हैं? अगर आप को महसूस होता है कि आप गुरु दीक्षा लेने के लिए तैयार हैं तो एक परिपक्व यीशु भक्त से इस के विषय में बात करें। और परिवार के महत्वपूर्ण सदस्यों और दोस्तों से भी आपके निर्णय के विषय में बात करें।
- एक दूसरे व्यक्ति के विषय में सोचिये जिसे आप यह शिक्षा बाँट सकते हैं। प्रार्थना करें कि आप उनसे बाँटें और कोशिश कीजिये कि आप अगले हफ्ते से पहले करेंगे।

# 3. तीसरा मार्गदर्शन : भगवान से प्रेम करना

**प्रेम** : राकेश जी, भगवान से प्रेम करने का वास्तविक मतलब क्या है? हम कैसे आशा भी रख सकते हैं कि हम उस प्यार में से कुछ लौटा सके जो उसने हमें दिखाया?

**राकेश जी** : यह एक बहुत अच्छा सवाल है प्रेम। यीशु ग्रन्थ कहता है कि भगवान ने हम से पहले प्रेम किया। यह कहता है कि भगवान ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने अपने एकलौते पुत्र सद्गुरु यीशु को भेज दिया। हम इतना कर सकते हैं कि हम भी उन को वापस में प्रेम करें।

**सुरेश** : अगर हम सच में भगवान से प्रेम करते हैं तो हमें उनके लिए बहुत कुछ करना चाहिए जैसे बड़े पूजा करवाएं और सद्गुरु यीशु के लिए उनके नाम पर बड़े-बड़े काम शुरू करें।

**राकेश जी** : भगवान यह नहीं चाहता है कि हम सिर्फ उनके लिए काम करें, वह चाहता है कि हम उनसे गहरी श्रद्धा और प्यार रखें। यही हमारी भक्ति है। दो बहनें थीं जिनके पास भी दो अलग-अलग विचार थे कि सद्गुरु यीशु को प्यार दिखाने के लिए कौन सा तरीका सही है। मैं आपको उनके बारे में बताता हूँ -

सद्गुरु यीशु देश में यात्रा कर रहे थे और जाते हुए बहुत लोगों को शिक्षा देते थे। एक गाँव में आये थे और वहाँ उसे एक स्त्री के घर में आने का निमंत्रण मिला जिसका नाम मार्था है। उसकी एक बहन भी थी जो उस के साथ रहती थी जिस का नाम मरियम था। मार्था बहुत व्यस्त थी पूरे घर में भागती हुई तैयारियाँ करने में और सद्गुरु यीशु के लिए खाना बनाने में। वह अपने काम में इतनी विचलित थी कि वह प्रभुजी के साथ कोई समय नहीं बीता पा रही थी। लेकिन मरियम शांति से गुरु जी के चरणों में बैठी हुई थी और उनकी हर एक बात को ध्यान से सुन रही थी। उसे यह बहुत अच्छा लगा कि वह उनके पास रहे और उनके साथ समय बिताए।

जब मार्था कुछ समय के लिए काम कर रही थी उसने

मरियम को यीशु जी के चरणों में बैठे हुए देखा। वह निराश हो गयी क्योंकि उसे लगा कि वही सारा काम कर रही थी और उसकी बहन मदद नहीं कर रही थी। तब उसने सद्गुरु यीशु से कहा "प्रभुजी क्या आप को ख्याल नहीं है कि मेरी बहन यहाँ बैठी है और काम में मेरी मदद नहीं कर रही है? मुझे सब अकेले करना पड़ रहा है! कृपया उसे मेरी मदद करने के लिए कहिये।"

तब सद्गुरु यीशु ने उत्तर दिया "मार्था, मार्था तुम बहुत सारे चीजों की वजह से परेशान और चिंतित हो। लेकिन सिर्फ एक चीज महत्वपूर्ण है। मरियम ने उत्तम चीज को चुन लिया है। मैं उस से वह कैसे छीन सकता हूँ?

**प्रेम** : वह महत्वपूर्ण, वह उत्तम चीज़ क्या थी जिसे मरियम ने चुना?

**सुरेश** : उसने यह चुना कि वह काम नहीं करेगी, इसलिए यह उत्तम है। मुझे भी काम करना अच्छा नहीं लगता है।

**राकेश जी** : सद्गुरु यीशु यह नहीं कह रहे थे कि हमें काम नहीं करना चाहिए। लेकिन वह कह रहे थे सब से महत्वपूर्ण चीज़ यह नहीं है कि हम भगवान के लिए काम करें लेकिन यह है कि हम भगवान के साथ में रहें। अकसर हम सोचते हैं कि हमें भगवान के लिए काम करना है और अगर हम करते हैं तो वे हम से खुश होंगे और हम से अधिक प्यार करेंगे। लेकिन हम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते हैं जिससे भगवान हम से कम या ज्यादा प्रेम करेंगे। वे हमेशा हमें अपने अनन्त प्रेम से प्रेम करेंगे। हमें सिर्फ इस प्रेम को स्वीकार करना है और भगवान से वैसा ही प्रेम करें। मरियम यीशु जी से बहुत प्यार करती थी और एक बार उनके महायज्ञ के पहले उसने उन्हें दिखाया कि वह उसे कितना प्यार करती थी। मैं आप को इस के विषय में बताऊंगा–

एक बार सद्गुरु यीशु एक धर्म गुरु, जिस का नाम शिमोन था, के घर खाने पर गये। जब वे खाना ख़त्म कर लिए थे और वे आराम कर रहे थे मरियम ने उस घर में प्रवेश किया। उसने सुना

कि सद्गुरु यीशु वहाँ थे और वह उस से मिलने आयी। वह अपने साथ एक बहुत महँगा इत्र की शीशी लायी थी। वह प्रेम से इतना भर गयी कि वह रोने लगी। और जैसे वह रोने लगी उसकी आँसू यीशु जी के पैर पर गिरने लगी। वह अपने बाल से अपनी आँसुओं को पोंछने लगी और उनके पैर को चूमने लगी। फिर उसने इत्र की महँगी शीशी को उनके पैरों पर गिरा दी।

जो भी घर में थे उन्होंने इसे देखा और हैरान हो गये। कुछ लोग शिकायत करने लगे यह कहते हुए कि इत्र बहुत महँगा था और उसे बेचा जाना चाहिए था और वह पैसे गरीबों में बाँटें जाएँ। धर्म गुरु शिमोन ने कहा कि "अगर यीशु जी सच में एक ईश प्रवक्ता होते तो उसे मालूम हो जाता कि यह कैसी स्त्री है और वह उसे उन्हें छूने नहीं देते क्योंकि वह पापी है।" जब यीशु जी ने यह सुना उन्होंने कहा कि "शिमोन मैं आप को एक कहानी बताता हूँ। एक साहूकार था जिसके दो लोग कर्ज़दार थे। एक पर पाँच सौ रुपया का कर्ज़ था और एक पर पचास रुपया का कर्ज़ था। जब उन्होंने कहा कि हम अपना कर्ज नहीं चुका पाएंगे उसने उन दोनों के कर्ज़ को रद्द कर दिया। अब मेरा सवाल आप के लिए यह है कि उनमें से कौन उस से अधिक प्रेम करेगा?

शिमोन ने शरमाकर कहा कि "शायद वह जिसे ज्यादा क्षमा मिली?" और सद्गुरु यीशु ने कहा कि "हाँ आप बिलकुल सही हैं। शिमोन इस स्त्री को देखिये। मैं आप के घर में आया लेकिन आप ने मुझे अपने पैर को धोने के लिए कोई पानी नहीं दिया। इसने अपने आंसुओं से मेरे पाँव धोये। आपने मेरा स्वागत नहीं किया लेकिन इसने मेरे पाँव को चूमा। मेरी बात ध्यान से सुनो– यद्यपि इसने बहुत से पाप किये, वे सभी क्षमा हो गए हैं क्योंकि इसने मुझसे बहुत प्रेम किया है। लेकिन जिस व्यक्ति को थोड़ा क्षमा प्राप्त हुआ वह थोड़ा प्रेम करता है। तब सद्गुरु यीशु मरियम की तरफ देखते हैं और उससे कहते हैं "शांति से जाओ, तुम्हारे पाप क्षमा हुए।"

**सुरेश** : अब मुझे मालूम हुआ कि मेरे मन में सद्गुरु यीशु के लिए इतना गहरा प्रेम क्यों है क्योंकि मैंने बहुत सी गलतियाँ की लेकिन वह मुझसे अभी प्रेम करता है।

**राकेश जी** : जी हाँ। हम भगवान से प्रेम करते हैं क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया और अपने पुत्र सद्गुरु यीशु को भेजा कि वह हमारे पापों को क्षमा करे।

**प्रेम** : मरियम ने सचमुच में अपनी भक्ति और श्रद्धा दिखाई, उसने ये भी नहीं सोचा कि लोग क्या सोचेंगे। वह तो सिर्फ उसके चरणों में आकर उसकी आराधना करना चाहती थी।

**सुरेश** : आये हम कुछ समय सनातन सद्गुरु यीशु के चरणों में बिताये और उससे कहें कि हम उससे कितना प्रेम करते हैं।

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

*जो प्रेम भगवान हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि भगवान ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं कि हम ने भगवान से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।* (1 योहन 4:9-10)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. क्यों राकेश जी ने कहा, कि भगवान ने हमसे पहले प्रेम किया?
2. इस कहानी में यीशु जी ने मार्था से ये क्यों कहा कि मरियम सबसे महत्वपूर्ण कार्य कर रही थी?
3. दूसरी कहानी में मरियम अपना प्रेम सद्गुरु यीशु को कैसे दिखाती है? यीशु जी के अनुसार मरियम ने इतना प्रेम क्यों दिखाया?
4. भगवान से प्रेम करने का क्या मतलब है? भगवान को प्रेम दिखाने के क्या व्यावहारिक तरीके हैं?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- कोई एक या दो तरीकों के बारे में सोचें जिससे आप भगवान को इस हफ्ते में अपना प्रेम और श्रद्धा दिखा सकते हैं।
- सद्गुरु के प्रेम के बारे में किसी को बतायें। मरियम की कोई एक कहानी इस हफ्ते अपने किसी दोस्त को बतायें।

# 4. चौथा मार्गदर्शन : अपने पड़ोसी से प्रेम करना

**सुरेश** : "अच्छे कर्म के लिए हमें कौन-कौन से काम करना चाहिए?"

**राकेश जी** : "ये जरूरी है कि हम अच्छे काम करें लेकिन सिर्फ अच्छे कर्म पाने के लिए नहीं। हम भक्त लोग इसलिए अच्छे कार्य करते हैं क्योंकि अब हम भगवान की आत्मा में नया जन्म लिये हैं और हमें सद्‌गुरु यीशु के जैसा होना और उनके मार्ग पर चलना है। तो हमें उनकी आज्ञाओं को मानना है।"

**प्रेम** : "यीशु जी बहुत सी आज्ञाएँ दी है, कौन सी आज्ञा सबसे महत्वपूर्ण है।

**राकेश जी** : "सभी आज्ञाएँ जरूरी हैं और हमें उन सब को मानना है। एक बार एक व्यक्ति सद्‌गुरु यीशु के पास आकर पूछता है कि 'सभी आज्ञाओं में सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है।' यीशु जी ने उत्तर दिया, "प्रभु जी अपने भगवान से अपने पूरे हृदय, प्राण, शक्ति और आत्मा से प्रेम रखें। ये सबसे बड़ी और महान आज्ञा है। और दूसरी आज्ञा ये है कि अपने पड़ोसी से अपने तरह ही प्रेम करें।" दोनों आज्ञाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। कभी-कभी भगवान से प्रेम करना आसान होता और पड़ोसी से प्रेम करना और कठिन है।"

**सुरेश** : "मेरे पड़ोसी तो बड़े खराब है, हमेशा अपने घर का सारा कचरा हमारे घर के सामने डाल जाते हैं।"

**राकेश जी** : "हमें याद रखना चाहिए कि यीशु जी ने कहा है कि हमें सिर्फ उन्हें प्रेम नहीं करना चाहिए जो हमारे साथ अच्छा व्यवहार करते हैं बल्कि उन्हें भी प्रेम करें जो हमारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं। हमें अपने दुश्मनों से भी प्रेम करना है।"

**प्रेम** : "लेकिन राकेश जी, हमारा पड़ोसी कौन है?"

**राकेश जी** : "जब एक आदमी ने सद्‌गुरु यीशु से यही सवाल किया तब उन्होंने उसे एक कहानी सुनाई। मैं भी तुम्हें वैसी ही एक कहानी सुनाता हूँ।

एक आदमी एक शहर से दूसरे शहर अपनी दुकान का माल लाने के लिए यात्रा कर रहा था। वह बहुत सा माल खरीद चुका था और अब अपने शहर को वापस लौट रहा था। रास्ते में कुछ लोगों ने उसे रोक लिया। उन्होंने उसे बड़ी बुरी तरह से मारा और चोरों ने उसका पूरा सामान और उसके कपड़े चुरा लिए और उसे मरने के लिए रास्ते पर ही छोड़ कर चले गए।

उसके कुछ समय बाद एक पुजारी जो पूजा करके लौट रहा था तभी उसने इस घायल आदमी को रास्ते पर पड़े देखा। जैसे ही उसने इस आदमी को देखा वह वहाँ से जल्दी से जल्दी निकल जाना चाहता था। वह इस आदमी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता था।

फिर कुछ समय बाद एक साधू भी वहाँ से गुजरा। जब उसने इस आदमी को रास्ते पर पड़े देखा तो वह रुका और उस आदमी पर अपनी नजर डाली। लेकिन ये भी बिना उसकी मदद किये बिना ही वहाँ से चला गया।

अब दोपहर हो चुकी थी। घायल आदमी पूरी तरह खून में लथपथ था, उसके होंठ सूख रहे थे और वह बहुत कमजोर हो चुका था। एक जमादार (झाड़ू मारनेवाला) उधर से गुजर रहा था। भोर से ही बाहर काम करके वह अपने घर जा रहा था। उसने उस आदमी को देखा और उसकी कराहने और मदद की पुकार को सुना। वह तुरंत उसकी ओर दौड़ा। उसने देखा कि आदमी जिन्दा तो है लेकिन बुरी तरह से घायल है। उसे उस पर बड़ी दया आयी। अपने पास से उसने कुछ पानी उसके सूखे होंठ पर डाले। उसने बचे पानी से उसके घाव को धोया और अपनी लुंगी से कपड़ा फाड़ कर उसको पट्टी बाँधी और उसने वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था। उसने एक बैल गाड़ी मँगाकर और गाड़ी वाले को अपने कुछ पैसे दे कर कहा कि वह उसे किसी डॉक्टर के पास ले जाये। डॉक्टर ने उस आदमी को अंदर ले जा कर उसकी मरहम पट्टी की।

**राकेश जी :** "जब सद्गुरु यीशु इस कहानी को सुना रहे थे तो वे यहूदियों से बाते कर रहे थे और उन्हीं की संस्कृति से उदाहरण देते थे। लेकिन जब हम कहानी सुनाते हैं तो

भारतीय जीवन का उदाहरण देते हैं। जब सद्गुरु यीशु ये कहानी सुना चुके तो उस व्यक्ति से पूछते हैं, 'उन तीनों में से उस घायल आदमी का पड़ोसी कौन था?'

**सुरेश** : ''हमें कैसे मालूम होगा कि उस घायल आदमी का पड़ोसी कौन था और उसका कहानी से क्या सम्बन्ध हैं? हमें ये भी नहीं मालूम कि वह आदमी कहाँ रहता है।''

**प्रेम** : ''राकेश जी 'पड़ोसी' से आपका क्या मतलब है?''

**राकेश जी** : ''जो उदार हो, दया रखने वाला, जिसका हृदय करुणा से भरा हो वही पड़ोसी है।''

**प्रेम** : ''तो वह जमादार जिसने उसकी मदद की, उसका पड़ोसी हुआ।

**राकेश जी** : ''हाँ, वह जमादार ही उसका पड़ोसी था। कहानी सुनाने के बाद सद्गुरु यीशु कहते हैं 'जाओ और ऐसा ही करो', मतलब कि हमें भी अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए। वह कोई भी जो हमारे आस पास रहता है वह हमारा पड़ोसी है। वसुधैव कुटुम्बकम् - पूरा संसार एक परिवार है।

**सुरेश** : ''मैं भगवान से और प्रेम करूँगा और अपने पड़ोसी से भी। मेरे पड़ोसी मेरे दरवाजे के सामने कचरा फेंकते हैं, इस के बावजूद हमें उनसे प्रेम करना है। क्या हम उन्हें अपने सत्संग में बुला सकते हैं?''

**राकेश जी** : ''ये तो बड़ा ही अच्छा विचार है। हम अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर सकते हैं जैसा कि सद्गुरु यीशु ने हमें सिखाया है। क्यों नहीं, तुम उन्हें अगले ही सत्संग के लिए बुलाओ।''

**यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–**

*यीशु जी ने उससे कहा, ''सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने प्रभु भगवान से प्रेम करना चाहिये।'' यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है : 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।'* (मत्ती 22:37-39)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. कौन से दो सबसे महत्वपूर्ण आज्ञाएँ यीशु जी ने दी हैं?
2. कहानी में पड़ोसी का मतलब क्या है?
3. पड़ोसी से प्रेम करना महत्वपूर्ण क्यों है?
4. वह कौन-कौन से लोग है जो आप के जीवन में पड़ोसी की तरह हैं? आप यीशु जी का प्रेम उनको कैसे दिखा सकते हैं?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- ये एक बहुत बढ़िया मौका है कि आप जो गुरुमार्ग में सीख रहे हैं उसे व्यवहार में डालें। अपने 'पड़ोसी' के लिए प्रार्थना करें और व्यवहारिक रूप से सेवा करें। सच में लोगों से इस हफ्ते प्रेम करने की योजना बनायें।
- प्रार्थना करें और कुछ लोगों के नाम लिखें जिन्हें आप भगवान का प्रेम दर्शायेंगे। हफ्ते में और लोगों के नाम भी जोड़ते जायें। भगवान से कहें कि इस हफ्ते के दौरान आप के द्वारा दूसरों के जीवन प्रभावित हो सके।

# 5. पांचवा मार्गदर्शन : महाप्रसाद लेना

**सुरेश** : "राकेश जी, आपने कहा कि ये पूरा संसार एक परिवार है। तो क्या इसका मतलब ये है कि सभी लोग मेरे गुरु भाई/बहन हैं।

**राकेश जी** : "हाँ, ये पूरा संसार एक परिवार है, लेकिन जो सद्गुरु यीशु को अपना एकमात्र गुरु स्वीकार करते हैं और गुरु दीक्षा लेते हैं और उनके दिए आज्ञाओं को मानते हैं वही हमारे गुरु भाई/बहन हैं।

**प्रेम** : "क्या इसका मतलब ये है कि हमारे सभी गुरु भाई और बहन हमारे आत्मिक परिवार का हिस्सा है?"

**राकेश जी** : "हाँ, हम एक आत्मिक परिवार हैं, इसलिए गुरु यीशु की यह एक आज्ञा भी है कि जब हम सत्संग के लिए एकत्रित होते एक विशेष भोजन करें।"

**सुरेश** : "कैसा विशेष भोजन? क्या कोई स्वादिष्ट पकवान खाना होता है?"

**राकेश जी** : "यह विशेष है क्योंकि ये सद्गुरु यीशु की मृत्यु और बलिदान को दर्शाता है। ये उसके शरीर और खून का चिन्ह है। चलिये मैं आपको उस विशेष भोज के बारे में बताता हूँ जो सद्गुरु यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले अपने शिष्यों के साथ लिया।"

यह एक बड़े त्यौहार का समय था, सभी लोग त्यौहार मनाने में मगन थे। सद्गुरु यीशु जानते थे कि शीघ्र ही उनकी मृत्यु होने वाली है। और उनके शिष्य एक खास कमरे में त्यौहार का भोजन करने बैठे। ये मुक्ति का त्यौहार था।

मुक्ति त्यौहार क्या है? मुक्ति त्यौहार पुराने समय से चला आ रहा था। सद्गुरु यीशु इस्राएल देश में रहते थे। बहुत साल पहले इस्राएल देश के लोग गुलाम हुआ करते थे। उनको एक दुष्ट राजा के लिए काम करना पड़ता था, राजा फिरौन। राजा फिरौन उनसे बड़ा ही कठिन परिश्रम करवाता था और उन्हें मारता-पीटता

था। वह मिश्र देश का बड़ा शक्तिशाली राजा था। इस्राएल देश के लोग ये देश छोड़कर मिश्र देश को जाना चाहते थे। लोगों ने मदद के लिए भगवान को रो-रोकर पुकारने लगे। तब भगवान ने उनके लिए एक ईश-प्रवक्ता को भेजा। जिनका नाम मोशे था।

ईश-प्रवक्ता मोशे कई बार मिलने गया। उसने राजा को बताया कि भगवान इस्राएल को गुलामी से मुक्त करना चाहता है, लेकिन फिरौन ने उन्हें मुक्त को करने से इनकार कर दिया। इसी कारण, भगवान ने राजा और मिश्र देश के लोगों को सजा दी। भगवान ने कीड़े-मकोड़ों को उनकी फसल नष्ट करने को भेजा। फिर उसने उन्हें परेशान करने के लिए मेढकों को भेजा। यहाँ तक कि उनका शरीर फोड़ों से भर गया था। इन सब के बावजूद राजा इनकार करता रहा। उसके बाद भगवान ने एक दिन राजा को एक आखिरी मौका दिया, लेकिन राजा फिर भी न माना। और एक अंतिम श्राप मिश्र देश पर पड़ा। वह अंतिम श्राप क्या था?

ईश-प्रवक्ता मोशे ने इस्राएल के लोगों से कहा कि मृत्यु दूत सभी के पहले जन्मे बेटे की जान ले लेगा, लेकिन भगवान अपने लोगों की रक्षा करेंगे।

अगर वह ये सुरक्षा चाहते हैं तो उन्हें एक मेमने का बलिदान देके उसके खून से अपने दरवाजे पर निशान बनायें। तो इस्राएल देश के लोगों ने अपने दरवाजे पर खून लगाया। उस रात मृत्यु दूत आया लेकिन वह सभी दरवाजे जिसमें खून था बचे रहे और मृत्यु दूत उनमें से किसी घर में न आया। और मिश्र देश के लोग जिन्होंने अपने दरवाजे पर खून नहीं लगाया था इस कारण उनके बेटे मर गए। इसके बाद, राजा ने इस्राएल के लोगों को मुक्त कर दिया। और सभी लोग आखिरकार आजाद थे। भगवान ने उन्हें आज्ञा दी कि वह इस दिन को हमेशा याद रखें और इस दिन मुक्ति का त्यौहार मनाया करें।

तो ये मुक्ति त्यौहार का इतिहास है। इस्राएल देश के लोग सौ साल से इस त्यौहार को मनाते आ रहे थे इस त्यौहार के समय, वे मेमने को याद करते जिसका बलिदान इनको मृत्यु से बचा लिया। वह मेमना मुक्ति का चिन्ह था। सच्चा मुक्ति तो

सद्गुरु यीशु द्वारा ही आता है। इसलिए उसे निष्कलंक मेमना कहा जाता है, जो दुनिया के सारे पाप को हटा लेता है।

सद्गुरु यीशु और उनके शिष्य एक साथ मुक्ति त्यौहार मना रहे हैं, साथ खाना खा रहे हैं। सद्गुरु यीशु जानते थे कि जल्दी ही कष्ट उठाकर उनकी मृत्यु होनी है। उसने उनसे कहा, "यह मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं आप के साथ यह भोजन खाऊँ पीड़ा से गुजरने से पहले।" उन्होंने रोटी ली और उसके लिए परम पिता परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उन्होंने उसे तोड़ा और भक्तों को दिया यह कहते हुए कि "इसे लो और खाओ। यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिए दिया जा रहा है।" तब उसी रीति से उन्होंने अंगूर के रस का लोटा के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि "यह मेरा खून है जो बहाया जाता है ताकि बहुत से लोग अपने पापों और अधर्मों का क्षमा पा सकते हैं। इसे लो और पियो।" उस मेमने की तरह जो लोगों को बचाने के लिए चढ़ाया गया, सद्गुरु यीशु भी अपने शिष्यों को यह दर्शा रहा था कि वह पूरे संसार के लिए महायज्ञ बनेगा।

**सुरेश** : "वह खून को कैसे पी सकते है?"

**राकेश जी** : "वह खून नहीं था, वह अंगूर का रस था। जो सद्गुरु यीशु के उस खून का चिन्ह था जो वह क्रूस पर बहाने वाला था। ठीक इसी प्रकार रोटी उसके शरीर का चिन्ह था जो सभी के लिए क्रूस पर टूट गया। ये प्याला और रोटी यहूदी चिन्ह है। हम भक्त अपने भारतीय संस्कृति से चिन्ह को इस्तेमाल करते हैं। हम नारियल को यीशु जी के जीवन और शरीर का चिन्ह बना सकते हैं और नारियल के पानी को यीशु जी के खून का चिन्ह बना सकते हैं जो उसने क्रूस पर बहाया।

**प्रेम** : "क्या इस भोज का भी एक विशेष नाम है?"

**राकेश जी** : "हाँ, हम इसे 'महाप्रसाद' कहते हैं जिसका अर्थ है सद्गुरु यीशु का 'महा अनुग्रह'। कुछ लोग इसे 'परम प्रसाद' भी कहते हैं, जिसका अर्थ है सद्गुरु यीशु का 'परम अनुग्रह'।

**सुरेश** : "मैं तो इस भोज को रोज लेना चाहूँगा।"

**राकेश जी** : ''यह एक विशेष भोज है और इसे गुरु यीशु के विशेष परिवार द्वारा तब लेना चाहिए जब वे एक साथ इकट्ठे हो। इस विशेष भोजन को हम एक साथ लेते हैं कि हम याद करें जो यीशु जी ने हमारे लिए किया और हम उन्हें धन्यवाद दे सकें।

**प्रेम** : ''क्या हम उनके भक्त होकर अभी एक साथ मिलकर महाप्रसाद ले सकते हैं कि हम उनके महायज्ञ को याद करें जो सद्गुरु यीशु हमारे लिए बन गए?

**राकेश जी** : ''हाँ, हम ले सकते हैं लेकिन हर बार जब भी हम महाप्रसाद लेते हमें अपने मन को पहले तैयार करना है। हम यीशु जी से अपने पाप की माफी मांगनी चाहिए। हमें दूसरों से भी माफी मांगनी चाहिए अपने गलत कामों के लिए जो हमने उनके विरुद्ध में किया। हमें उनको माफ भी करना है जो हमारे विरुद्ध गलत करते हैं। जब भी हम महा प्रसाद लें हमें सद्गुरु यीशु के उस बड़ी कीमत को याद करना चाहिए जो उन्होंने हमें पाप से मुक्त करने के लिए चुकाई है। महाप्रसाद लेने के द्वारा हमें हमेशा सद्गुरु के पीड़ा को याद रखना चाहिए।''

वे कुछ मिनटों तक शांत बैठकर ध्यान करते हैं और अपने दिलों को तैयार करते हैं। राकेश जी एक नारियल को तैयार करता है और उसको तोड़ना शुरू करता है यह दर्शाने के लिए कि कैसे सद्गुरु यीशु को क्रूस पर किलों से चढ़ाया गया। नारियल फूट जाती है और उस से पानी बहता है जिस से उन्हें याद आती है कि यीशु जी ने उनके पापों को क्षमा करने के लिए कैसे अपने खून को बहाया। वह भगवान को धन्यवाद देते हैं कि सद्गुरु यीशु ने हम सब के लिए यह कार्य किया है। उनके दाहिने हाथ में एक चम्मच नारियल पानी डाल देते हैं और वे उसे पीते हैं। तब वह उन दोनों को नारियल का एक टुकड़ा देते हैं और वे उसे खाते हैं। तब राकेश जी प्रेम से विनती करता है कि वह भी उसे उसी रीति से महाप्रसाद दें।

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

*फिर उसने थोड़ी रोटी ली और धन्यवाद दिया। उसने उसे तोड़ा और उन्हें देते हुए कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी गयी है। मेरी याद में ऐसा ही करना।" ऐसे ही जब वे भोजन कर चुके तो उसने कटोरा उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे उस रक्त के रूप में एक नयी वाचा का प्रतीक है जिसे तुम्हारे लिए उँडेला गया है।* (लूका 22:19-20)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. गुरु भाई/बहन होने का क्या मतलब है? यह विशेष कैसे है?
2. महाप्रसाद क्या है? महा प्रसाद कौन खा सकता है?
3. महाप्रसाद खाने के समय आपको क्या याद करना चाहिए?
4. महाप्रसाद खाने से पहले आपको क्या करना चाहिए?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- एक परिपक्व यीशु भक्त से इस हफ़्ते बात करें और उनके साथ महाप्रसाद लेने की कोशिश करें।
- महाप्रसाद का एक यह उद्देश्य है कि यीशु जी के मृत्यु को याद करें। अपने दोस्त या परिवार के सदस्य को यीशु जी के महायज्ञ की कहानी सुनायें।

# 6. छठवाँ मार्गदर्शन : साधना

**राकेश जी** : "सद्गुरु यीशु अक्सर पहाड़ों पर या कभी जंगलों में चले जाया करते थे कि भगवान के साथ अकेले समय बिता सकें। हम अपना रिश्ता भगवान के साथ और मजबूत कर सकते हैं। यीशु जी की तरह, हम शान्त जगह पर प्रार्थना कर सकते हैं और भगवान की खोज कर सकते हैं, जैसे अपने घर में या नदी के किनारे या किसी पेड़ के नीचे बैठ के।"

**प्रेम** : "राकेशजी, प्रार्थना क्या है?"

**सुरेश** : "मैंने सुना है कि मंत्र जपना पूजा है। ओझा जब मंत्र पढ़ता है तब उसे शक्ति मिल जाती है।"

**राकेश जी** : "प्रार्थना शक्तिशाली है, लेकिन यीशु ग्रन्थ में हम देखते हैं कि, प्रार्थना सिर्फ शक्ति के बारे में नहीं है। यह भगवान के साथ रिश्ते के बारे में है। प्रार्थना हमारे हर दिन की साधना और आध्यात्मिक जीवन का हिस्सा होना चाहिए। इसे साधना कहते हैं।"

**प्रेम** : "साधना क्या है?"

**राकेश जी** : "साधना भगवान की उपस्थिति में समय बिताना है। मेरे रिश्ते को भगवान के साथ बढ़ाना ही मेरा साधना है। साधना का लक्ष्य एक होना है - भक्त और गुरु के बीच गहरा रिश्ता होना है। ये हमारी भक्ति है भगवान के लिए सद्गुरु यीशु द्वारा। हम उनके साथ एक हैं। वह वृक्ष है और हम उसकी डालियाँ हैं। जब हम उसके साथ एक हो जाते हैं तो उसे बड़ा अच्छा लगता है। मैं आपको बताता हूँ कि सद्गुरु ने साधना के द्वारा क्या अनुभव किया।

सद्गुरु यीशु का परम पिता परमेश्वर के साथ एक बहुत सुंदर रिश्ता था। उनकी आदत थी कि वो अकेला दूर चले जाते थे कि वो भगवान के साथ अकेले रहें। वो परम पिता को सुन सकते थे और उनसे बातें भी कर सकते थे। कभी-कभी वो पहाड़ पर

सबसे ऊपर चले जाते थे। कभी वो नाव पर या नदी के उस पार चले जाया करते थे। एक बार वो व्रत किए थे और रेगिस्तान में 40 दिनों तक चले।

उनकी मृत्यु से एक रात पहले, उसे अपनी साधना में बहुत शक्तिशाली अनुभव मिला। सद्गुरु यीशु अपने शिष्यों के साथ पहाड़ के ऊपर प्रार्थना करने गये। यीशु ने अपने शिष्यों को कहा, "तुम लोग यहाँ बैठो तब तक मैं वहाँ जाकर अकेले में प्रार्थना करता हूँ।" उन्होंने पारस, याकूब और योहन को अपने साथ लिया। यीशु बड़े दुःखी और परेशान थे क्योंकि वो जानते थे कि जल्दी ही वो मरने वाले हैं। तब उन्होंने तीनों शिष्यों से कहा "मेरा मन बहुत उदास है यहाँ तक कि इस कारण मैं मरने पर हूँ। मेरे साथ यहाँ पर जागते रहो और प्रार्थना करो।"

वो अपने तीनों शिष्यों से थोड़ी ही दूरी पर जाकर भूमि पर गिर गये और भगवान से प्रार्थना करने लगे। वो ये कहते हुए साधना के समय में आते हैं। वो प्रार्थना करते हैं "हे पिता, अगर ये सम्भव है, इस दुःख के कटोरे को मेरे पास से हटा ले। लेकिन मेरी इच्छा नहीं, जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"

तब वो अपने शिष्यों के पास आता है और उन्हें सोता हुआ पाता है। "क्या तुम एक घंटा भी मेरे साथ जाग कर प्रार्थना नहीं कर सकते?" उसने पारस से कहा "जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में ना पड़ो। आत्मा तैयार है लेकिन शरीर कमजोर है।"

वो दूसरी बार दूरी पर गया और प्रार्थना की, "पिता जी, अगर ये सम्भव नहीं है कि ये मृत्यु और कष्ट का कटोरा मुझ पर से हटा लिया जाए जब तक कि मैं उसे पी ना लूँ, तो तेरी इच्छा पूरी हो।" और इस साधना के समय, सद्गुरु यीशु भगवान के दिये उस कार्य को स्वीकार कर लेते हैं।

जब वो वापस आ कर देखता है तो पाता है कि उसके शिष्य फिर से सो रहे हैं। वे जगने में असमर्थ थे और अन्त में वे सो गये। तो यीशु उन्हें छोड़कर तीसरी बार दूर जाता है और वही कह कर भगवान से प्रार्थना करता है, अपने आप को मृत्यु के लिए तैयार करता है।

तब वो शिष्यों के पास आते हैं और कहते हैं, ''क्या तुम लोग अभी भी सो रहे हो? देखो समय आ गया है! अब मेरा जीवन ले लिया जायेगा। उठो! चलो! मेरा पकड़ने वाला आ रहा है।''

तब यीशु जी को गिरफ्तार करके ले जाते हैं।

**प्रेम** : ''यीशुजी ने भगवान के साथ साधना के द्वारा ही, इतनी शक्ति पाई तभी वो उन सारी मुश्किलों का सामना कर पाये।

**राकेश जी** : ''भगवान कहते हैं कि हम अपनी समस्याएँ उनके पास लाए। विनती प्रार्थना में भगवान से ज़रूरतों को माँगना है। वो हमारी मदद करना चाहते हैं। जो भी हो हमें उसके साथ समय बिताना चाहिए क्योंकि वो भगवान हैं और हम उससे प्रेम करते हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि हम उससे कुछ लेना चाहते हैं।

**सुरेश** : ''मेरी माताजी हर सुबह और शाम पूजा करती हैं और भगवान से बहुत सी चींजे माँगती हैं।

**राकेश जी** : ''हम अपने भक्ति को कई तरह से दर्शा सकते हैं - प्रार्थना, भजन कीर्तन, पूजा, जप, इत्यादि। हम अपनी भक्ति इस लिए नहीं देते है कि हम भगवान से कुछ पाना चाहते हैं, लेकिन उनको हमारे प्रेम दिखाने के लिए।

**सुरेश** : ''तो साधना के लिए मैं क्या कर सकता हूँ?

**राकेश जी** : ''भगवान के साथ समय बिताने का ये भी तरीका है कि हम अकेले शान्ति में उनके साथ रहें। ये ध्यान मनन कहलाता है। इस समय में हम अपने मन को सभी सोच-विचार से शान्त करके भगवान पर ध्यान लगाते हैं। हम अपने गुरु के चरणों में बैठते हैं। हम अपने मन के मन्दिर में सद्गुरु यीशु की आराधना करते हैं। हमारे ध्यान मनन में आराधना, पाप स्वीकार, और धन्यवाद शामिल हो सकता है।

**प्रेम** : ''क्या हम यीशु ग्रन्थ पढ़ सकते हैं?

**राकेश जी** : ''हाँ, बहुत अच्छा। भगवान अपने भक्तों से बात करना चाहते हैं। वह हमारे मन की गहराई में अलग-अलग तरीकों

से बात करते हैं। यीशु ग्रन्थ के वचनों के द्वारा भी वह हमसे बात करता है।

**प्रेम** : "लेकिन राकेशजी, यीशु ग्रन्थ तो बहुत बड़ा है, मैं उसे कैसे समझ सकता हूँ?

**राकेश जी** : "आप ध्यान मनन में यीशु ग्रन्थ को शामिल कर सकते हैं। आप यीशु ग्रन्थ के छोटे वचनों को 2 से 3 बार धीरे धीरे पढ़े। फिर लगभग 5 मिनट तक शान्त रहें। होने दीजिए कि भगवान आप को कोई विशेष शब्द या वाक्य उस वचन से दिखाएँ। अपने मन की गहराई से, भगवान से इस वचन के बारे में बात करें और फिर शान्त रहें। भगवान को अपने मन में बोलने दें। उसे अपने वचन से छुपे खजाने को जाहिर करने दे। इसके बाद जब उसने उस वचन से आप को कुछ प्रकट करते हैं, तब भगवान से पूछे कि कैसे ये वचन आपके जीवन पर लागू होता है। माँगे कि वो आपके जीवन को उनके वचन के अनुसार बदल दें, जैसा कि वो चाहता है। अंदरूनी शक्ति के लिए प्रार्थना करें कि आप वो कर पाये जो वो चाहता है।

**सुरेश** : "हम कैसे जानेंगे जब भगवान हमसे बात कर रहे हैं?

**प्रेम** : "क्या वो हमसे जोर जोर से बोलते हैं?

**राकेश जी** : "वो शायद करें, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि वो इस तरह से बात करें। ज्यादातर वो हमारे आत्मा की गहराई में बोलता है, और हम उसे मन की गहराई में धीमी आवाज में सुनते हैं। दिव्य मनन के द्वारा हम उसके वचन को अपना आहार बनाते हैं।

**सुरेश** : "क्या इसका मतलब है कि हमें यीशु ग्रन्थ को खाना पड़ेगा?

**राकेश जी** : "हमें यीशु ग्रन्थ के पन्नों को खाना नहीं है। लेकिन सद्गुरु यीशु ने कहा कि मनुष्य सिर्फ रोटी पर जीवित नहीं रहेगा लेकिन भगवान के मुँह से हर आये हुए शब्दों पर रहेगा। इसका अर्थ है कि हमें सिर्फ शारीरिक भोजन नहीं, लेकिन आत्मिक भोजन की भी आवश्यकता है।

सुरेश उठ के जाने लगता है।

**प्रेम** : "सुरेश, कहाँ जा रहे हो?

**सुरेश** : "मैं बहुत उत्साहित हूँ। मैं जंगल में जा कर भगवान की साधना अकेले में करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ध्यान मनन में भगवान मुझ से बात करें।

**राकेश जी** : "बहुत अच्छा। और क्यों नहीं कल सुबह हम जल्दी उठ के यहाँ मिले और ताजे मन से साथ में दिव्य मनन करे।"

**प्रेम और सुरेश** : "जरूर!

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

*"मुझ में बने रहो, जैसे मैं तुममें, जिस प्रकार शाखा, यदि अंगूर की बेल में न रहे तो अपने आप नहीं फल सकती। उसी प्रकार तुम भी यदि मुझमें न रहो तो फल नहीं सकते। मैं अंगूर की बेल हूँ और तुम शाखाएं हो. जो मुझमें रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फलता है, क्योंकि मुझसे अलग रह कर तुम कुछ नहीं कर सकते।* (योहन 15:4-5)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. यीशु जी ने भगवान के साथ कैसे समय बिताया?
2. साधना का लक्ष्य क्या है? कौन कौन से तरीके बताये गये कि आप भगवान के और करीब आ सकें?
3. हमें भगवान के साथ समय क्यों बिताना चाहिए?
4. 'उसके वचन का आहार लेना' का क्या मतलब है?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- कोई समय निश्चित करें जिसमें आप भगवान के साथ अपने रिश्ते को मजबूत कर सके अपने साधना में, जैसे सुबह या शाम को।
- प्रार्थना करें और अपने मित्र या परिवार के सदस्य को निमंत्रण दें आप के साथ दिव्य मनन करने के लिए।

# 7. सातवाँ मार्गदर्शन : विनती प्रार्थना

**सुरेश** : ''राकेश जी, सद्‌गुरु यीशु के पीछे चलने के बावजूद, मेरे जीवन में बहुत सी परेशानियाँ हैं। मैं क्या करूँ?

**राकेश जी** : ''हमारे परमपिता हमारी चिन्ता करते हैं। सद्‌गुरु यीशु परमपिता की तुलना हमारे सांसारिक पिता से करते हैं। उसने कहा :

''मांगा, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। आप में से ऐसा कौन है, कि अगर उसका बेटा उस से रोटी माँगे, तो आप उसे पत्थर देंगे? वो मछली माँगे, तो उसे साँप दें? जब आप बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी चीजें देना जानते हैं, तो आप का परम पिता अपने मांगने वालों को अच्छी चीजें क्यों नहीं देंगे?''

**प्रेम** : ''मेरे पिता बड़ी मेहनत करते हैं जिससे कि मैं बढ़िया शिक्षा ले सकूँ। मैं जानता हूँ कि वो मुझ से बहुत प्रेम करते हैं।

**राकेश जी** : ''सही बात है प्रेम। अगर हमारा सांसारिक पिता जानता है कि हमारी देखभाल कैसे करे, तो परमपिता हमसे कितना प्रेम करता है? सद्‌गुरु यीशु हमसे कहते हैं कि हम परमपिता से माँगें। इस तरह की प्रार्थना को हम विनती प्रार्थना कहते हैं।

**सुरेश** : ''हाँ, लेकिन कभी-कभी मैं किसी चीज के लिए प्रार्थना करता हूँ लेकिन मुझे उत्तर नहीं मिलता। मुझे क्या करना चाहिए?

**राकेश जी** : ''जब प्रभु यीशु के शिष्यों ने यही प्रश्न किया उसने उन्हें यह कहानी सुनाई।

एक छोटे नगर में एक जज था जिसे भगवान पर विश्वास नहीं था, और उसे अपने अलावा किसी की चिन्ता नहीं थी। उसी नगर में एक बूढ़ी विधवा भी रहती थी। वह कुछ कानूनी मुसीबत में थी। शायद कोई उसका घर हड़प लेना चाहता था। उसने कुछ

करने की सोची इस बारे में। वह जज के पास गयी और उनसे कहने लगी कि "कचहरी में मेरे विरोधी से न्याय पाने में मेरी मदद करें। जज ने इसको करने से इन्कार कर दिया और उसे अपनी जगह से दूर चले जाने को कहा।

विधवा जरूर बहुत दुःखी हो गयी होगी, लेकिन वो हार नहीं मानी। अगले दिन वो उठ कर जज के पास गयी। और फिर उसने उससे पूछा, और जज ने इन्कार कर दिया। लेकिन वो हारी नहीं। पता है उसने क्या किया? हर दिन वो कचहरी जा कर जज से पूछती थी जब तक आखिर में जज उससे थक कर कहा कि "ठीक है, मैं तुम्हें न्याय दिलाऊंगा।" जज ने मन में सोचा कि "मैं ना भगवान को मानता हूँ और ना ही मुझे इस विधवा या किसी और की चिन्ता है, लेकिन मैं इस विधवा को न्याय दिलाऊंगा, नहीं तो ये रोज रोज यहाँ आ कर मेरा दिमाग खायेगी।

तब सद्गुरु यीशु ने कहा, "सुनो उस अन्यायी जज ने क्या कहा। अगर उसने यह कहा तो क्या हमारे पिता परमात्मा अपने चुने हुओं को न्याय नहीं दिलाएगा, जो उसे दिन रात पुकारते रहते हैं? क्या वो उन्हें इन्कार करते रहेंगे? मैं आपको बताता हूँ, वो उन्हें जल्दी से जल्दी न्याय दिलाएगा। तो भी, जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पायेगा?

**सुरेश** : "तो क्या भगवान उस जज की तरह हैं? क्या हमें उन्हें ऐसे ही परेशान करना पड़ेगा जब तक कि हमें वो मिल ना जाये जो हमें चाहिए?"

**प्रेम** : "नहीं भगवान ऐसा नहीं है। वो हमें अच्छी चीजे देना चाहते हैं।

**राकेश जी** : "सद्गुरु यीशु जो शिक्षा इसमें दे रहे हैं वो ये है कि भगवान उस जज की तरह नहीं हैं। वह हमारा पिता है और हमारी चिन्ता करता है। तो अगर हम उससे विनती प्रार्थना करते रहें तो, वह हमारी जरूर सुनेगा। फिर भी वो जानता है कि हमारे लिए क्या अच्छा है। शायद वो हमें वो ना दे जो हम चाहते हैं, लेकिन वो हमें अपने समय में वही देगा जिसकी हमें जरूरत है।"

**सुरेश** : "लेकिन मुझे नहीं मालूम है कि प्रार्थना कैसे किया जाता है?"

**राकेश जी** : यीशु जी के शिष्यों ने भी यही प्रश्न किया था, और उन्होंने उससे कहा कि वो उन्हें सिखाए कि प्रार्थना कैसे करे। यीशु जी ने उन्हें बताया–

"आप इस रीति से प्रार्थना कीजिये; "हे हमारे परम पिता, आपका नाम पवित्र माना जाए। आपका राज्य जल्दी आए। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दें। और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही आप भी हमारे अपराधों को क्षमा कीजिये। और हमें परीक्षा में न लाइये, लेकिन बुराई से बचाइए।"

**सुरेश** : "अरे वाह! ये तो बहुत सरल है। मैं सोचता हूँ कि मैं कोशिश कर सकता हूँ। बस हमें ये करना है कि हमारे परमपिता को बताएँ कि हमारी हर दिन की ज़रूरतें क्या हैं।"

**प्रेम** : "सुनो, आज मेरे पड़ोस में एक व्यक्ति बीमार है। मैं उसके लिए प्रार्थना करना चाहूँगा।"

**राकेश जी** : "हाँ, ये बहुत जरूरी है कि हमें सिर्फ अपने बारे में नहीं लेकिन दूसरों के बारे में भी प्रार्थना करना है। चलिये आपके पड़ोसी के लिए अभी प्रार्थना करें। शायद आप और सुरेश जाकर अपने पड़ोसी से मिल भी सकते हैं। आप उनके घर पर भी उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं।"

**सुरेश** : "मैं तो इससे पहले किसी के लिए प्रार्थना नहीं किया, खास कर के उनके घर में जा कर।"

**प्रेम** : "चिन्ता मत करो सुरेश। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। चलो प्रार्थना करें कि भगवान आप को हिम्मत दे।"

वे साथ में प्रार्थना करते हैं।

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

*किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ भगवान के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।* (फिलिप्पियों 4:6)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. परमपिता किस तरह के पिता हैं?
2. जज की जो कहानी थी उसमें मुख्य शिक्षा क्या थी?
3. क्या आपने किसी चीज के लिए प्रार्थना की और बार-बार उसे मांगा? आप इससे क्या सीखते हैं?
4. राकेश जी ने कहा, ''शायद वो हमें वो ना दे जो हम चाहते हैं, लेकिन वो हमें अपने समय में वही देंगे जिसे हमें जरूरत है।'' इसमें क्या फर्क है कि भगवान हमें वह सब दे जो हमें 'चाहिए' और जिसकी हमें 'जरूरत' है?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- अपने परिवार और दोस्तों की एक सूची बनायें और उनके लिए लगातार प्रार्थना करे, विशेष रूप से उनके लिए जो गुरुमार्ग पर नहीं चल रहे हैं।
- उन लोगों के बारे में सोचें जिनके जीवन में कुछ परेशानियाँ हैं। उनके लिए प्रार्थना करें, और इस हफ़्ते उनको बतायें कि आप उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

# 8. आठवाँ मार्गदर्शन : उदारता से देना

**सुरेश** : "मुझे विनती प्रार्थना बहुत पसंद है। यह कितना अच्छा है कि हम भगवान से अपनी जरूरतों को माँगे और उन्हें पायें।

**राकेश जी** : "आप क्या सोचते हैं। क्या देना अच्छा है या पाना?"

**सुरेश** : "ओ, पाना अच्छा है। अगर हम देंगे तो हमारे पास क्या बचेगा?"

**प्रेम** : "लेकिन अगर हम दूसरों को दे जिन्हें जरूरत है, तो क्या भगवान हमें नहीं देंगे।"

**राकेश जी** : "सद्गुरु यीशु ने कहा 'दूसरों को दो तो तुम्हें और भी दिया जायेगा। तुम्हारे देने से भी ज्यादा दिया जायेगा।' भक्त पाल कहते हैं कि भगवान उनसे प्रेम करते हैं जो दूसरों को देते हैं।"

**प्रेम** : "लेकिन हमें किसको देना चाहिए?"

**राकेश जी** : "हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जब भी हम दें हमें ऐसा देना चाहिए जैसे कि हम भगवान को दे रहे हो। यीशु जी ने कहा कि हमें चुंगी लेने वाले को वो देना जो उसका है और भगवान को वो देना जो उसका है। सद्गुरु यीशु के संसार में आने से पहले भगवान ने यह आज्ञा दी कि लोग अपने कमाई का दसवाँ भाग दें।

**सुरेश** : "दसवाँ भाग! इसका मतलब अगर 100 रुपया है तो उसमें से 10 रुपये भगवान को देने हैं। अगर मैं भगवान को अपनी कमाई का 10 प्रतिशत देता हूँ तो मेरे लिए तो कुछ बचेगा ही नहीं।"

**राकेश जी** : "असल में, 100 प्रतिशत भी भगवान का है। आप सिर्फ उसका प्रतिशत उसे लौटा रहे हैं। यीशु जी ने कहा कि हमें इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए कि हम क्या खायेंगे, पीयेंगे और पहनेंगे। परमात्मा हमारी जरूरतों को जानते हैं और उसे पूरी करेंगे ठीक वैसे ही जैसे वो चिड़ियों और पेड़ पौधों की करते हैं। हम तो चिड़ियों और पेड़ पौधों से भी ज्यादा

महत्वपूर्ण है। यीशुजी ने कहा कि पहले भगवान और उसके राज्य की खोज करे और फिर भगवान हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करेंगे।''

**सुरेश** : ''मेरे व्यापार में अभी बड़ी परेशानी चल रही है। मैं अभी भगवान को नहीं दे सकता। ये सारे अमीर लोग अपने पैसे दें। जब मेरे पास पैसा होगा तो मैं दूंगा। भगवान मुझसे अभी नहीं लेना चाहेंगे, है कि नहीं?''

**राकेश जी** : ''एक दिन यीशु जी मंदिर में थे और उन्होंने एक गरीब औरत को अपना सब कुछ देते हुए देखा। चलो मैं आप को बताता हूँ क्या हुआ।''

एक दिन यीशु जी और उनके शिष्य मंदिर के बड़े से द्वार पर बैठ कर आराम कर रहे थे। वे बातचीत कर रहे थे। यीशु जी और उनके शिष्य कई लोगों को दान देते हुए देख रहे थे। उन्होंने एक बड़ी मोटी को देखा, जिसने बड़े महंगे कपड़े पहने हुए है, वो सोने के गहनों से लदी हुई थी। उसने देखा कि वो बड़े घमंड से एक बड़े रकम को दान पेटी में देती है, कि सब देख सकें। वहाँ पर और भी अमीर लोग दान दे रहे थे - कोई पैसा तो कोई रत्न, सोना, हीरा और मोती। इस भीड़ में जहाँ कोई आ रहा है कोई जा रहा है...यीशु जी एक बूढ़ी विधवा को देखते हैं जिसने बहुत पुराने कपड़े पहने हुए है। कोई उसकी तरफ ध्यान भी नहीं दे रहे थे, लेकिन यीशु जी बड़े ध्यान से देख रहे थे। उसने लाइन में प्रतीक्षा की और धीरे से दान पेटी पर आई। और अपने कपड़े के गाँठ से उसने दो सिक्के निकाले और दोनों को पेटी में डाल दिया। शिष्यों ने भी इसे देखा और सोचा कि यह औरत कंजूस है और देना नहीं चाहती है। तब सद्गुरु यीशु उनकी तरफ मुड़े और कहा, ''इन सभी में जिन्होंने दान दिया, इस औरत ने सबसे ज्यादा दिया।''

सुरेश हँसने लगता है।

**सुरेश** : ''यीशु जी मजाक तो नहीं कर रहे हैं।''

**प्रेम** : ''यीशु जी ने जरूर देखा होगा कि और लोगों ने कितना दिया, तब वो ऐसा क्यों बोले?''

**राकेश जी** : "यीशु जी मजाक नहीं कर रहे थे। वो लोगों के मन की बात कर रहे थे। उस औरत ने सबसे ज्यादा दिया क्योंकि उसने वो सब दे दिया जो उसके जीने के लिए चाहिए था। दूसरे सभी अमीर थे और उन्होंने जितना उनके पास है उसमें से थोड़ा दिया। देने के बाद भी उनके पास अपने लिए बहुत होगा। उस औरत ने तो अपना सब कुछ दे दिया, चाहे वो ज्यादा नहीं था, लेकिन उसके बाद उसके पास कुछ नहीं बचा।

**प्रेम** : "तो औरत को पता था कि दान देने के बाद उसके पास उसके लिए कुछ नहीं बचा, लेकिन उसने भगवान पर भरोसा किया कि वो उसकी देखभाल करेंगे।"

**राकेश जी** : "भगवान सब कुछ देखते हैं जो हम देते हैं। हम भगवान पर भरोसा कर सकते हैं। वो हमारे देने से भी ज्यादा हमें देंगे। वो जरूर करेंगे। भगवान झूठ नहीं बोलते। वो अपने बातों को हमेशा पूरी करते हैं।"

**सुरेश** : "तौभी, मैं चाहूँगा कि दूसरों को देने के बाद भी मेरे पास पर्याप्त हो।"

**प्रेम** : "क्या तुम्हें भगवान पर विश्वास नहीं है कि वो तुम्हारी ज़रूरतों को पूरी करेंगे जैसे हम दूसरों को देंगे? मुझे लगता है कि हमें और देना चाहिए। यहाँ हमारी गली में एक गरीब परिवार है जिनके पास खाने के लिए भी कुछ नहीं है। क्यों नहीं हम उन्हें कुछ दे?"

राकेश जी सहमत हो जाते हैं, प्रेम जा कर कुछ खाना ले आते हैं और उस परिवार में जाते हैं जो जरूरत में है।

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

*"दो, और तुम्हें दिया जाएगा।"* (लूका 6:38)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. अपने जो अभी पढ़ा है उस पर शांतिपूर्वक ध्यान करें। भगवान आपको इसके बारे में क्या कह रहे हैं?"

2. इस कहानी में, यीशु जी यह क्यों कहा कि उस विधवा ने सबसे अधिक दिया?
3. क्यों दोनों, अमीर चाहे गरीब को भगवान को देना चाहिए?
4. कौन-कौन से तरीके हैं जिसके द्वारा हम भगवान को दे सकते हैं?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- कुछ तरीके जिससे हम भगवान को दे सकते हैं–यीशु सत्संग में दान दे कर और जरूरतमंद की देखभाल करके, जैसे कि गरीब को खाना खिलाना, अगर किसी को दवाई या कपड़े से मदद करना। प्रार्थना करे और भगवान से पूछे कि आप लगातार और उदारता से देना शुरू करे इस हफ्ते। आप खुद से कर सकते हैं या दूसरे यीशु भक्तों के साथ।
- प्रार्थना करे और सद्गुरु यीशु की एक या दो कहानी जो आपने सीखी उसे अपने किसी दोस्त या परिवार के सदस्य को सुनायें।

# 9. नौवां मार्गदर्शन : शिष्य बनाना

**प्रेम** : "लगता है सद्गुरु यीशु ने अपने भक्तों को मानने के लिए बहुत सी आज्ञाएँ दी हैं।"

**सुरेश** : "मुझे लगता है कि हमें पालन करने के लिए बहुत ज्यादा आज्ञाएँ हैं। हम कैसे इन सारी आज्ञाओं को पालन कर पाएंगे?"

**राकेश जी** : "सद्गुरु यीशु ने परम पिता की आज्ञाओं को बड़े आनन्द के साथ पालन किया यहाँ तक कि मृत्यु के हद तक। एक भक्त ने यह लिखा कि जब यीशु जी क्रूस की मृत्यु सहे तो भी वो आनंदित थे क्योंकि वे क्रूस के मृत्यु के बाद जो भगवान का राज्य था, उसको देख पा रहे थे। जिसमें लोग पापी से पवित्र होकर सच्चे और जीवित भगवान की उपासना कर रहे थे।

**प्रेम** : "लेकिन बहुत से लोग हैं जो सच्चे भगवान को नहीं जानते और सच्चे मार्ग पर नहीं चल रहे हैं। वे लोग कैसे सच्चे भगवान की उपासना कर सकते हैं?"

**राकेश जी** : "आप सही हैं। बहुत से लोग हैं जो सच्चे और जीवित भगवान की आराधना नहीं करते हैं। कुछ लोग सच जानते हैं लेकिन उन्होंने भगवान की आज्ञाओं का उल्लंघन करने का फैसला किया है। लेकिन बहुत से लोग सच्चे मार्ग को जानते ही नहीं हैं। इसी कारण से तो सद्गुरु यीशु आये, ताकि सभी लोग सच्चे मार्ग पर चल सकें और भगवान के परिवार में शामिल हो पाएँ।"

**सुरेश** : "लेकिन राकेश जी आपने कहा कि पूरा संसार हमारा परिवार है। वसुधैव कुटुम्बकम्।"

**राकेश जी** : "जब तक हम इस संसार में हैं सामाजिक रूप से हम एक परिवार हैं, क्योंकि भगवान ने हम सब को बनाया है और वह हमें ऐसे नहीं देखता है कि हम भारतीय हैं या चाइना के

हैं या अफ्रीका से हैं या यूरोप से हैं, या गोरे या काले या लम्बे या छोटे या अमीर या गरीब या किसी जाति से हम आये हों। वह हम सब को एक समान देखता है। हमें अपने समाज को बदलने की जरूरत नहीं है और ना ही परिवार को छोड़ना है, लेकिन सद्गुरु यीशु ने कहा कि भगवान के राज्य में शामिल होकर उसके परिवार का हिस्सा बनने के लिए हमें उसकी आत्मा से आत्मिक जन्म का अनुभव करना होगा। दूसरे शब्दों में, हमें भगवान की आत्मा में जन्म लेना होगा और तभी हम भगवान के परिवार का हिस्सा बन सकते हैं। जो भी भगवान की आत्मा से जन्म ले चुके हैं वह हमारे गुरु भाई और गुरु बहन हैं।

**प्रेम** : "बहुत से लोग हैं जो आत्मिक जन्म के बारे में नहीं जानते हैं।"

**राकेश जी** : "इसी कारण यीशु जी ने हमें यह आज्ञा दी है कि हम जाएँ और सभी लोगों को सिखाएँ कि वे कैसे उनके अनुयायी बन सकते हैं। हमें उन्हें बताने की जरूरत है कि कैसे उन्हें अपने पापों से क्षमा मांग कर सद्गुरु यीशु पर विश्वास करना है। तो वे लोग भी आत्मिक जन्म ले सकें और भगवान के परिवार का हिस्सा बन सकें। तब हमें उन्हें यह सिखाना है कि वे कैसे सद्गुरु यीशु की सभी आज्ञाओं का पालन करें। यह सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा हमें सद्गुरु यीशु ने दी है; इसलिए यह 'महा आज्ञा' कहलाता है। यह आखिरी आज्ञा थी जिसे यीशु जी ने धरती छोड़ने से पहले अपने शिष्यों को दी। यह हुआ कि..."

"सद्गुरु यीशु के जी उठने के एक दिन बाद की बात है वह अपने शिष्यों के साथ भोजन कर रहे थे। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा–"शहर को मत छोड़कर जाना, भगवान के उस उपहार का इन्तजार करो जिसकी प्रतिज्ञा उसने की है। गुरु योहन तो जल से दीक्षा देते हैं लेकिन कुछ ही दिनों में तुम लोग परमात्मा से दीक्षा पाओगे।"

''जब तुम परमात्मा की आत्मा की शक्ति पाओगे तुम मेरे सन्देश वाहक बन कर पृथ्वी में सब जगह मेरी शिक्षा लोगों तक पहुँचाओगे। जैसे कि मेरे पिता ने मुझे भेजा, मैं भी तुम्हें इस जगत में भेजता हूँ।''

कुछ समय बाद यीशु जी ने अपने शिष्यों को एक ऊंचे पहाड़ पर बुलाया। उन्होंने सद्गुरु यीशु की आराधना की वहाँ। तब उसने उनसे कहा, ''पृथ्वी और स्वर्ग का पूरा अधिकार मुझे दिया गया है। तो जाओ और सभी देश में शिष्य बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पावन आत्मा के नाम से जल संस्कार दो। और जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी है वह उन्हें मानना सिखाएँ। याद रखो मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ समय के अंत तक।''

जब उसने ये बातें कह ली, चमत्कारी रूप से वह धरती से ऊपर उठने लगा और हवा में तैरने लगा। वह उनके आँखों के सामने ही ऊपर उठा। उन्होंने बड़े भय और अचम्भे के साथ सब कुछ देखा। उन्होंने अपने आँखों के साथ उस पर अपनी दृष्टि रखे जैसे जैसे वह ऊपर गया। तब एक बादल ने उसे छिपाया और फिर वे उसे देख नहीं पाये।

उसके जाने के बाद वे सदमा में लम्बे समय तक वहाँ खड़े रहे आसमान में देखते देखते। तब अचानक दो आदमी जो श्वेत कपड़ों में थे वह उनके बगल में खड़े होकर प्रगट हुए। उन्होंने कहा कि, ''आप यहाँ खड़े होकर आसमान में क्यों देख रहे हैं? सद्गुरु यीशु स्वर्ग में उठे और जैसे आप ने उसे जाते हुए देखा वैसे ही वह वापस आएगा।''

**प्रेम** : ''तो हमें भी महा आज्ञा का पालन करना चाहिए और हर जगह दूसरों को सद्गुरु यीशु के बारे में बताएँ।''

**सुरेश** : ''लेकिन मेरे पास पैसा नहीं है कि मैं पूरे संसार में यात्रा करूँ।''

**राकेश जी** : ''आप जहाँ भी हैं, दूसरों को यीशु जी की शिक्षाओं के पालन करने को सिखा सकते हैं। आप को दूर जाने की जरूरत नहीं है। लेकिन शायद एक समय होगा जब यीशु जी हमें कहें कि हमें एक खास जगह जाना है और वहाँ

दूसरों को उसके विषय में बताएँ। उसने अपने भक्तों से यह करने को कहा और उन्होंने खुशी से बात मानी। इसी कारण से हमने मुक्तिदाता, सद्गुरु यीशु के बारे में सुना। अगर उन भक्तों ने भगवान की बात को नहीं मानी तब हम कभी शुभ सन्देश नहीं सुनते और न ही सद्गुरु यीशु के भक्त बनते। हमें लोगों को मुक्तिदाता के बारे में बताने का कार्य को जारी रखना है। यीशु जी ने यह आज्ञा दी और हमारे प्रभु और गुरु होने के नाते हमें उसकी बात माननी है।''

**प्रेम** : ''लेकिन हम दूसरों को सद्गुरु यीशु के आज्ञाओं का पालन करना कैसे सिखाते हैं?''

**राकेश जी** : ''गुरु यीशु ने कहा कि हम संसार के नमक और जगत की ज्योति हैं।''

**सुरेश** : ''नमक होने का क्या मतलब है?''

**राकेश जी** : ''यीशु जी ने कहा, 'आप पृथ्वी के नमक हैं; लेकिन अगर नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो फिर वह किसी काम का नहीं रह जाता है।' नमक खाना में स्वाद लाता है। उसके रहने से लोग खाने को खाना चाहते हैं। उसी तरह अगर सद्गुरु यीशु के साथ हमारा साधना है तो लोग हमारे जीवन की ओर आकर्षित होंगे। यीशु जी ने यह भी कहा कि, 'आप जगत की ज्योति हैं। लोग दिया जलाकर टोकरी के नीचे नहीं लेकिन वहाँ रखते हैं जहाँ सब लोग उसे देख सकते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार आप का उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे आप के भले कामों को देखकर भगवान की बड़ाई करें।''

**प्रेम** : ''तो अगर लोग देखते हैं कि हमारे यीशु जी में भक्ति होने के कारण हमारा जीवन स्वाद और ज्योति से भरा हुआ है तो वे भी उस पर विश्वास करना चाहेंगे।''

**राकेश जी** : "हाँ यह सही है और इसके अलावा कि हम लोगों को सिखाएँ कि सद्गुरु यीशु है कौन, हमें दूसरों को यह भी बताना है कि उसने हमारे जीवनों को कैसे बदल दिया और हम मुक्ति कैसे पाये।

**सुरेश** : "मैं भी दूसरों को सद्गुरु यीशु मुक्तिदाता की कहानी बताना चाहता हूँ। मैं यह बताना चाहता हूँ कि उसने मेरे जीवन में क्या किया है।

**राकेश जी** : "हाँ, सोचिए - हम सब अगर दो लोगों को भी बतायें तो जल्दी ही सब लोग शुभ सन्देश जान लेंगे। कितना अच्छा होगा।"

**सुरेश** : "मैं जहाँ रहता हूँ मैं वहीं दूसरों को शुभ सन्देश सुनाना चाहता हूँ। और एक दिन शायद सद्गुरु यीशु अपने लिए मुझे नयी जगह पर सन्देश देने के लिए बुलाये।"

राकेश जी सुरेश और प्रेम के लिए प्रार्थना करता। वे दूसरों को सद्गुरु यीशु के बारे में बताने के लिए बहुत उत्सुक है। उस हफ़्ते सुरेश अपने भाई को सद्गुरु यीशु के बारे में बताता है। उनके भाई बड़ी जिज्ञासा रखते हैं और यीशु जी के बारे में और जानना चाहते हैं। तो वे साथ में सत्संग जाते हैं। सुरेश के भाई को बहुत अच्छा लगता और वह दुबारा सत्संग में आना चाहते हैं। घर में बैठकर सुरेश अपने भाई को यीशु जी के गुरुमार्ग के बारे में बताता है।

**यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–**

*"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पावन आत्मा के नाम से गुरु दीक्षा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा।"* (मत्ती 28:19-20)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. इस संसार में हम सब एक बड़ा परिवार है लेकिन सभी लोग भगवान के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। कौन उनके राज्य में प्रवेश कर सकता है?
2. महा आज्ञा क्या है?
3. यीशु जी ने अपने शिष्यों को क्या बताया उनके जाने से पहले?
4. इस का मतलब क्या है कि हमें नमक और ज्योति होना है?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- एक या दो यीशु भक्तों के साथ मिलकर दस लोगों की एक सूची बनाये जिनके लिए आप प्रार्थना करें जो अभी तक सद्गुरु यीशु को नहीं जानते हैं। इनके लिए लगातार प्रार्थना करते रहे कि भगवान उन्हें सद्गुरु यीशु द्वारा अपना सच्चा मार्ग दिखाए।
- जिनके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं कम से कम उनमें से एक के पास अपने किसी एक यीशु भक्त मित्र के साथ जायें और उन्हें सद्गुरु यीशु के बारे में बतायें।

# 10. दसवां मार्गदर्शन : सत्संग

**सुरेश** : "वह, कितना बढ़िया है जब लोग यीशु जी का अनुसरण करने लगते हैं।"

**राकेश जी** : "हाँ, बहुत बढ़िया है। लेकिन एक बात को याद करना बहुत जरूरी है। जब लोग भक्त बन जाते हैं हमें उनको सत्संग में बुलाना चाहिए।

**सुरेश** : "सत्संग का सही अर्थ क्या है?

**राकेश जी** : "सत्संग का मतलब संगति है। यह दो शब्द का जोड़ है, सत्य और संग। यह एक सत्य की संगति है। कोई गुरु के पीछे अकेले नहीं जा सकते हैं।

**सुरेश** : "लेकिन जो भक्ति में मजबूत है उनको दूसरों की जरूरत नहीं है। भगवान में उनकी विश्वास उनकी मदद करेगी न?"

**प्रेम** : "हमें एक दूसरे की जरूरत है मजबूत बनाने के लिए।

**राकेश जी** : "हाँ बिलकुल सही। यहाँ इस डंडा को देखिए। जब यह अकेला है इस को तोड़ना बहुत आसान है।

राकेश जी एक लकड़ी के डंडा को उठाते हैं और वह आसानी से दो टुकड़ों में टूट जाता है।

**राकेश जी** : "लेकिन यह देखिये कि क्या होता है जब हम एक साथ संगति करते हैं। राकेश जी लकड़ियों का एक बण्डल उठाते हैं और उसे सुरेश को देता है। सुरेश उस बण्डल को तोड़ने की कोशिश बार-बार करते हैं पर कर नहीं पाते।

**राकेश जी** : "एक साथ एकता में रहने और सत्संग करने का यही मतलब है। अगर हम भक्त होने के नाते एक साथ है तो शैतान हमें तोड़ नहीं पाएगा।

**सुरेश** : "लेकिन कभी कभी दूसरों के साथ मिल जुल कर रहना आसान नहीं है, चाहे वे भक्त भी हो।"

**प्रेम** : "हाँ, कभी-कभी आप के साथ भी मिल जुल के रहना कठिन है सुरेश।" सब हँसते हैं।

**राकेश जी** : ''यह कठिन हो सकता है, लेकिन सद्गुरु यीशु हमारे लिए यही तो चाहते हैं। उसने प्रार्थना किया कि हम सब एक हो जैसे वह और पिता परमेश्वर एक है। भक्त पाल हमें बताता है कि हम सब एकता में कैसे रहें।''

क्योंकि तुम पिता परमेश्वर के चुने हुए पवित्र और प्रियजन हो, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नर्मता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करोः जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को धारण करो। प्रेम ही सब को आपस में बाँधता और परिपूर्ण करता है। और यीशु मुक्तिदाता की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो।

**सुरेश** : ''तो मुझे लगता है कि मुझे दूसरों को सहना चाहिए और उन्हें क्षमा करूँ अगर सद्गुरु यीशु यही चाहते हैं।

**प्रेम** : ''हाँ। तभी हम एक साथ प्रेम और एकता में रह सकते हैं।''

**राकेश जी** : ''मैं आप को एक कहानी बताऊँ जिस में पूर्वकाल भक्त लोग एकता में एक साथ रहते थे।''

सद्गुरु यीशु के बादलों में ऊपर जाने के बाद उनके शिष्य जगह जगह जाके उनके जीवनकथा और शिक्षाओं के विषय में बताते थे। इन शिक्षाओं ने बहुत से लोगों के जीवनों को स्पर्श किया। वे सद्गुरु यीशु के प्रति समर्पित थे और वे उनके शिक्षाओं के अनुसार जीते थे। वे एक दूसरे के साथ संगति में रहते थे। वे सब कुछ साथ में करते थे। वे बैठकर एक दूसरे के घरों में खाते थे। जब भी वे मिलते थे तो वे बहुत समय बिताते थे एक दूसरे के साथ। सभी भक्त अचंभित थे जब वे देखते थे कि प्रभु के शिष्य बहुत सारे चमत्कारों को करते थे। सभी भक्तों ने एक दूसरे के साथ सब कुछ बाँट दिये। उनमें से कुछ अपने संपत्तियों को भी बेच रहे थे, जो कुछ उनका था, और वह पैसा उनको दिये जिनको जरूरत थी। कुछ लोगों ने अपने मकानों को भी बेच दिया कि उनके समुदाय में जिनको जरूरत थी उसको पूरा कर दें। हर दिन वे एकता और संगति में रहते थे। वे मिलते थे भगवान के आराधना के

लिये। वे एक साथ खाते थे और खुश दिलों से खाना को ग्रहण करते थे। वे हर समय भगवान की स्तुति करते थे। यहाँ तक कि जो उस क्षेत्र में अन्य लोग थे जो भक्त नहीं थे उनका आदर करते थे उनके अच्छे कार्य और आपस के प्यार के वजह से। इन सारी बातों के वजह से अधिक से अधिक लोग सद्गुरु यीशु में विश्वास करने लगे और उनकी संगति में शामिल हुए। और भगवान ने भक्तों के संख्या को प्रतिदिन जोड़ देते थे। बहुत सारे लोग उस प्रेम के समाज के सदस्य बनना चाहते थे। वे भी उस में शामिल होना चाहते थे।

**प्रेम** : ''वह सच में यह बहुत अद्भुत है।''

**सुरेश** : ''अब मुझे लगता है कि मैं समझ रहा हूँ कि भगवान क्यों चाहते हैं कि हम एकता में रहें और एक दूसरे के साथ सत्संग करें।

**राकेश जी** : ''हाँ यह सच है। और याद कीजिये कि सत्संग सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है जहाँ हम एकत्रित होते हैं और प्रार्थना करते हैं और भजन गाते हैं हफ़्ते में एक बार। यह एक निरंतर संगति है, जिस में भक्त लोग एकता में रहते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं। इस में हम उन चीजों को बाँटते हैं जो हमारे पास है और उनको देते हैं जिस को जरूरत है। इस में हम सद्गुरु यीशु की भक्ति करते हैं और एक दूसरे के साथ प्रार्थना में समय बिताते हैं। इस में हम एक दूसरे के साथ सह लेते हैं और उनको क्षमा करते हैं जिन्होंने हमें चोट पहुंचाये।''

**सुरेश** : ''हाँ और यह मत भूलना एक साथ खाना खाने का।''

**राकेश जी** : ''हा, हा। हाँ, हमें एक दूसरे के साथ खाना खाना चाहिए और एक दूसरे की संगति का मजा उठाएँ। और हम इस को करते रहेंगे जब इस पृथ्वी पर हमारे जीवन खतम हो चुके हैं। हम भगवान और पूरे संसार के भक्तों के साथ स्वर्ग में अनन्त संगति करेंगे। हम वहाँ एक साथ सत्संग में होंगे– दुनिया के हर एक भाषा, जनजाति और देश से लोग होंगे वहाँ। उस पल में राकेश जी की पत्नी खाना लाती है। राकेश जी,

प्रेम और सुरेश एक साथ खाना खाते हैं। वे बातचीत करते हैं इस पर कि दुनिया में लोगों को एक दूसरों को प्रेम करना इतना कठिन क्यों है। इस दुनिया में इतनी लड़ाईयाँ हैं। लेकिन स्वर्ग में लोग एक साथ शांति से खाएँगे।

**सुरेश** : "सत्संग होने से ऐसा लगता है कि स्वर्ग धरती पर आ गया है।

**प्रेम** : "वाह, वह तो बहुत अच्छा होगा।"

**राकेश जी** : "बहुत अच्छा होगा।"

## यीशु ग्रन्थ के इस खास वचन को याद करें–

*और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की आदत है। बल्कि हमें तो एक दूसरे को उत्साहित करना चाहिए। और जैसा कि तुम देख ही रहे हो कि सद्गुरु यीशु के वापस आने का दिन निकट आ रहा है। सो तुम्हें तो यह और अधिक करना चाहिए।* (इब्रानियों 10:25)

## इन सवालों का जवाब दें–

1. सत्संग का अर्थ क्या है?
2. भक्तों का एक साथ मिलना क्यों आवश्यक है?
3. क्या भक्तों का एक दूसरे के साथ मिल जुल कर रहना आसान है? हम क्या करें जब ये आसान नहीं होता है?
4. राकेश जी ने क्यों कहा कि सत्संग सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है?

## लागू करने के लिए सुझाव–

- यीशु सत्संग का हिस्सा बने। अपने यीशु भक्त मित्रों से इस अवसर के बारे में पूछे। अगर आप किसी यीशु सत्संग में कभी नहीं गए हैं तो यीशु सत्संग विडियो देखें। ये इंटरनेट पर www.ashramoflight.com पर उपलब्ध है। अगर आपके आस पास कोई यीशु सत्संग नहीं चलता है तो अपने यीशु भक्त मित्रों के साथ प्रार्थना करे कि एक सत्संग चल सके।
- प्रार्थना करें और कम से कम अपने एक दोस्त या परिवार के सदस्य को यीशु सत्संग में आने का निमंत्रण दे।

**Ashram of Light © 2013**
**www.ashramoflight.com**